भाकृअनुप
ICAR

सी एम एफ आर आइ
CMFRI

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सं. 149 अप्रैल - जून 2016 ISSN 0972-2386

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

http://www.cmfri.org.in

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, महानिदेशक, भा कृ अनु प मछली वाइरस निदान किट ß नोडाडिटेक्ट का औपचारिक लाँच करते हुए

कृपया पृष्ठ 5 देखें

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पी.बी. सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ., कोचीन - 682 018, केरल, भारत

विषय सूची

सी एम एफ आर आइ में महानिदेशक का दौरा	3
अनुसंधान मुख्य अंश	8
राजभाषा कार्यान्वयन	14
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	15
स्वच्छ भारत	16
प्रशिक्षण कार्यक्रम	18
प्रदर्शनियाँ	18
आगंतुक	18
कृषि विज्ञान केन्द्र (एरणाकुलम) समाचार	19
कार्यक्रम में सहभागिता	20
मानव संसाधन विकास	22
कार्मिक समाचार	22

प्रकाशक

डॉ. ए. गोपालकृष्णन
निदेशक
भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बोक्स सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी. ओ.
कोच्ची - 682 018, केरल, भारत
दूरभाष: 0484-2394867
फैक्स: 91-484-2394909
ई-मेल: director@cmfri.org.in
वेबसाइट: www.cmfri.org.in

संपादक

डॉ. यू. गंगा

संपादकीय मंडल

डॉ. रेखा जे. नायर
डॉ. आर. जयभास्करन
डॉ. काजल चक्रबर्ती
श्री डी. लिंग प्रभु
श्रीमती पी. गीता
श्री अरुण सुरेन्द्रन
श्री पी. आर. अभिलाष

हिन्दी संपादन

श्रीमती ई.के. उमा

निदेशक कहते हैं

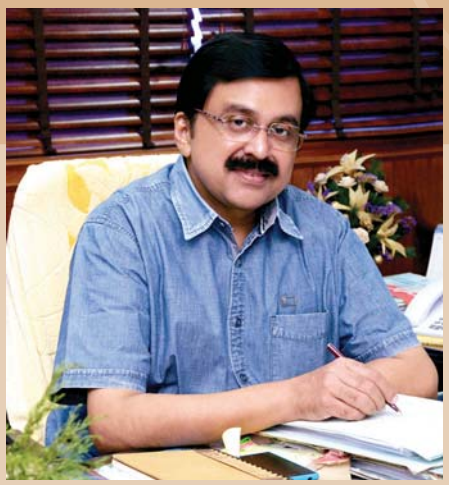

सभी को हार्दिक अभिवादन!

तिमाही के दौरान, संस्थान में संचालित कई परियोजनाओं का अच्छा परिणाम निकला है। समुद्री शैवालों से उत्पादित मधुमेह निवारक न्यूट्रास्यूटिकल कडलमीन ADe, के वाणिज्यिक तौर पर उत्पादन के लिए समझौता ज्ञापन और समुद्री मछली अवतरण आंकडे का वार्षिक औपचारिक विमोचन इन में उल्लेखनीय हैं। इस अवधि के दौरान संस्थान को जंगली जीवजंतु और वनस्पतियों की खतरे में पड़ गयी प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कन्वेन्शन (सी आइ टी ई एस) के पंजीकृत वैज्ञानिक संस्थानों की सूची में मान्यता प्राप्त हुई है, जिससे प्रजाति परिरक्षण से संबंधित अनुसंधान गतिविधियों में सुविधा हो जाएगी। संस्थान ने मात्स्यिकी सेक्टर के हितधारकों के साथ लगातार सार्थक विचार विनिमय प्रारंभ किया है। संस्थान अनुसंधान परिषद की वार्षिक बैठक के आयोजन के साथ-साथ संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों में संबंध स्थापित करने और उसका हितधारकों तथा समाज को दीर्घ काल तक इनका लाभ प्रदान करने में ध्यान दिया जाता है। XII वीं योजना की परियोजनाओं की समाप्ति के इस अवसर पर भविष्य के लिए अनुसंधान योजनाओं और कार्यक्रमों की तैयारी के लिए अब तक की गयी गतिविधियों और उपलब्धियों का आकलन किया जाना है। भा कृ अनु प - सी एम एफ आर आइ का परिशोधित अधिदेश आगामी वर्षों में हमारी गतिविधियों का मार्गदर्शन करने लायक होगा। सभी को अपने प्रयासों में आगे बढ़ने तथा सफलता की शुभकामनाएं।

अ. गोपाल

ए. गोपालकृष्णन
निदेशक

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन कोच्ची में स्थापित केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केन्द्र जो कि मंडपम कैंप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा सात अनुसंधान केन्द्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

महानिदेशक-भा कृ अनु प का सी एम एफ आर आइ में दौरा

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा कृ अनु प) ने दिनांक 18 अप्रैल, 2016 को β नोडाडिटेक्ट, जो कोबिया और समुद्री बास जैसी समुद्री मछलियों में ग्रसित बीटानोडा वाइरस के निदान का सिंगिल ट्यूब रिवेर्स ट्रान्स्क्रिप्शन लूप मीडिएटड आइसोथेर्मल एम्प्लिकेशन (सिंगिल ट्यूब आर टी-लैंप) निदान किट है, का औपचारिक उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री छबिलेन्द्र राऊल, आइ ए एस, अतिरिक्त सचिव, डेयर तथा सचिव, भा कृ अनु प और डॉ. प्रवीण पुत्रा, सहा. महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), भा कृ अनु प भी उपस्थित थे।

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, जो भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में दौरे पर आए थे, ने कहा कि उपभोक्ताओं के लिए प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए विज्ञान का उपयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने कोबिया और सिल्वर पोम्पानो, जो वाणिज्यिक प्रमुख मछली प्रजातियाँ हैं, के प्रजनन और खुला सागर में पिंजरा पालन के लिए संस्थान द्वारा किए गए अग्रणी कार्यों की उपलब्धियों की सराहना की।

इस अवसर पर, डॉ. महापात्र ने संस्थान के मात्स्यिकी सर्वेक्षण कर्मचारियों द्वारा पी सी टैबलेट के उपयोग से मछली अवतरण केन्द्र में ही समुद्री मछली अवतरण का आकलन करने लायक वेब पर आधारित ऑनलाइन एप्लिकेशन का लाँचिंग किया। द्रुत आंकड़ा संग्रहण और पुनःप्राप्ति को लक्षित करके एप्लिकेशन बनाया गया है। भौगोलिक तौर पर मान्यता प्राप्त वैज्ञानिक नमूना चयन कार्यक्रम पर आयोजित राष्ट्रीय समुद्री मछली अवतरण डाटाबेस के संग्रहण और मिलान में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस अवसर पर भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा परिचालन किए जाने वाले इंडियन मराइन मामल स्ट्रान्डिंग एंड साइटिंग नेटवर्क (आइ एम एम एस एस एन) का लाँचिंग भी किया गया। एफ ए ओ (यू एन) का प्रकाशन खाद्य सुरक्षा और गरीबी उन्मूलन के प्रसंग में टिकाऊ लघु पैमाने की मात्स्यिकी को सुरक्षित करने के स्वैच्छिक मार्गदर्शन, जो लघु पैमाने की मात्स्यिकी सेक्टर के लिए पूरी तरह समर्पित और अंतर्राष्ट्रीय तौर पर सहमत मात्स्यिकी शासन का औजार है तथा उत्तरदायित्वपूर्ण 1995 एफ ए ओ आचरण संहिता (सी सी आर एफ) के संपूरक के रूप में तैयार किया गया है, के मलयालम अनुवाद, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का नागरिक चार्टर और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के कृषि विज्ञान केन्द्र समाचार का औपचारिक विमोचन भी इस अवसर पर किया गया।

मधुमेह निवारक न्यूट्रास्यूटिकल के वाणिज्यिक उत्पादन के लिए समझौता ज्ञापन पर भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा हस्ताक्षर

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और डॉ. ए.एन. सिंह, प्रबंध निदेशक, सेलेस्टियल बायोलैब्स लिमिटड, हैदराबाद ने 25 अप्रैल, 2016 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में आयोजित कार्यक्रम में मधुमेह निवारक न्यूट्रास्यूटिकल कडलमीन ™ ADe के वाणिज्यिक उत्पादन और विपणन के लिए समझौता ज्ञापन (एम ओ यु) पर हस्ताक्षर किया। पटना में 26 जुलाई, 2016 को आयोजित भा कृ अनु प स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी द्वारा इस उत्पाद का औपचारिक विमोचन किया गया था।

टाइप-2 मधुमेह के लिए मधुमेह निवारक एक्स्ट्राक्ट कडलमीन™ ADe का वाणिज्यीकरण: सेलेस्टियल बयोलेब्स के साथ एम ओ यु

कडलमीन ™ ADe टाइप-2 मधुमेह के उपचार के लिए फायदेमंद है और इसके हाइपोग्लाइकीमिया जैसे पार्श्वफल (रक्त के ग्लूकोस के स्तर में होनेवाली असाधारण कमी) नहीं है। न्यूट्रास्यूटिकल के जैवसक्रिय घटक आंत्र से निकाले जाने वाले सिंपिल शुगर के साथ हस्तक्षेत करते हैं और इससे पोस्टपान्ड्रियल (भोजन के बाद) की हाइपरग्लाइकीमिया (रक्त में शुगर का उच्च स्तर) घटाते हैं। कडलमीन™ ADe चुने गए समुद्री शैवालों से पेटेन्डड प्रौद्योगिकी द्वारा निकाले गए 100% प्राकृतिक समुद्री जैवसक्रिय संघटक हैं और इन्हें सेलेस्टियल बायोलैब्स लिमिटड,

जो हैदराबाद स्थित जी एम पी/डब्लू एच ओ द्वारा प्रमाणित बायोफार्मस्यूटिकल कंपनी है, द्वारा 500 मि.ग्रा. के कैप्स्यूलों में उपलब्ध कराया गया है। कडलमीन ™ ADe तैयार करने में मधुमेह निवारण की गतिविधियाँ कायम रखने हेतु विशेष प्रकार के जैवरासायनिक इंजिनीयरिंग तकनीकों का उपयोग किया गया है और यह लंबा शेल्फ लाइफ सुनिश्चित करता है। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ समुद्र की प्राकृतिक संपदाओं की क्षमता का विदोहन करने की राष्ट्रीय नीति के आधार पर समुद्री शैवालों से और अधिक स्वास्थ्य उत्पाद विकसित करने के काम में लगे हुए हैं।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा समुद्री मछली अवतरण आंकडा-2015 का लोकार्पण

मुख्यालय में 30 मई, 2016 को आयोजित प्रेस सम्मेलन में वर्ष 2015 का वार्षिक समुद्री मछली अवतरण आंकड़े का लोकार्पण किया गया। रिपोर्ट यह दर्शाती है कि पिछले वर्षों की तुलना में वर्ष 2015 के दौरान भारत की समुद्री मछली पकड़ में 5.3% की घटती हुई है। वैज्ञानिक आंकड़ों के अनुसार देश का समग्र समुद्री मछली अवतरण वर्ष 2014 के 3.59 मिलियन टन की अपेक्षा 1.89 लाख टन (5.3%) की कमी के साथ वर्ष 2015 में 3.40 मिलियन ट (टन) तक घट गया है।

वार्षिक समुद्री मछली अवतरण आंकडा-2015 का औपचारिक लोकार्पण

दक्षिण पश्चिम तट, जिस में केरल, कर्नाटक और गोवा आते हैं, में तारलियों के अवतरण में तेज़ घटती (51%) आकलित की गयी है। वर्ष 2014 में 5.45 लाख टन तारलियों के अवतरण की अपेक्षा वर्ष 2015 में केवल 2.66 लाख टन तारलियों का अवतरण किया गया और अवतरण में सबसे अधिक प्राप्त एकल प्रजाति के योगदान में वर्ष 2014 के 15% से वर्ष 2015 में 8% तक की कमी देखी गयी। वर्ष 2015 के दौरान अन्य प्रजातियों/ग्रुपों की पकड़, लेसर सारडीन 2.56, भारतीय बांगडा 2.38, पेनिआइड झींगा 1.99, फीतामीन 1.77, सूत्रपख ब्रीम 1.63, क्रॉकेर्स 1.55, नोन-पेनिआइड झींगा 1.49, स्कड 1.12 और बम्बिल 1.10 थी। इन संपदाओं में लेसर सारडीन, भारतीय बांगडा, सूत्रपख ब्रीम और स्कड की पकड़ में पिछले वर्ष की तुलना में प्रगति हुई है, लेकिन अन्य संपदाओं की पकड़ में कमी देखी गयी। उच्च मूल्य वाली हिल्सा शाड, जो पश्चिम बंगाल की मात्स्यिकी का प्रमुख आधार है, का वर्ष 2014 में 5,247 टन अवतरण किया गया था, और वर्ष 2015 में अवतरण 20,659 टन तक बढ़ गया।

माननीय केन्द्र कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री डॉ.संजीव कुमार बलियान का दौरा

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री डॉ. संजीव कुमार बलियान ने कोचीन स्थित कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीनस्थ संस्थानों के साथ विचार-विमर्श बैठक में भाग लेने के लिए दिनांक 15 जून, 2016 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में दौरा किया। बैठक में भाषण देते हुए उन्होंने देश के कृषि क्षेत्र को सुधारने के लिए वैज्ञानिकों से किसान उन्मुख अनुसंधान गतिविधियों पर ध्यान देने का आह्वान दिया। उन्होंने ज़ोर दिया कि वैज्ञानिकों को हमेशा किसानों, जो भारत के कृषि सेक्टर की आधारशिला है, के लिए काम करना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि देश में कृषि एवं मछली उत्पादन बढ़ाए जाने के लिए दीर्घकाल की अनुसंधान परियोजनाएं आयोजित करना आवश्यक है।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने सभा का स्वागत किया और संस्थान की कार्यविधियों और उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। माननीय मंत्री ने विविध संस्थानों द्वारा विकसित चालू कार्यविधियों और प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन किया। समुद्री पिंजरों में मछली पालन और कोबिया, सिल्वर पोम्पानो और ओरंज स्पोटड ग्रूपर जैसे मछली प्रजातियों के संतति उत्पादन में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा दिए गए योगदानों की उन्होंने सराहना की। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने यह अनुरोध किया कि संस्थान द्वारा समुद्री पिंजरा मछली पालन की प्रौद्योगिकी पहले ही मछुआरों को हस्तांतरित की गयी है, अतः व्यवस्थित रूप से पिंजरा मछली पालन करने हेतु समुद्री संवर्धन नीति बनायी जानी चाहिए। भा कृ अनु प के अन्य संस्थानों जैसे भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, भा कृ अनु प-सी आइ एफ आर आइ और भा कृ अनु प-एन बी एफ जी आर, राष्ट्रीय मात्स्यिकी संग्रहणोत्तर प्रौद्योगिकी एवं प्रशिक्षण संस्थान (एन आइ एफ पी एच ए टी टी), केन्द्रीय मात्स्यिकी नौचालन एवं इंजिनीयरिंग प्रशिक्षण संस्थान (सी आइ एफ एन ई टी), भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, नारियल विकास बोर्ड, प्लान्ट क्वारन्टाइन एवं फ्यूमिगेशन स्टेशन, स्पाइसेस बोर्ड और काजू और कोको विकास निदेशालय के निदेशक भी बैठक में उपस्थित थे।

विचार-विमर्श बैठक का दृश्य

β-नोडाडिटेक्ट

मछली में β-नोडा विषाणु निदान के लिए सिंगिल ट्यूब आर टी-लैंप

बीटा नोडा विषाणु से समुद्री पख मछली के डिंभकों और किशोरों में वाइरल नेर्वस नेक्रोसिस (वी एन एन), जिसे वाइरल एनसेफलोपती और रेटिनोपती (वी ई आर) भी कहा जाता है, के परिणामस्वरूप बडे पैमाने में मछलियों की मृत्यु होती है। इस रोग का प्रभावकारी इलाज उपलब्ध नहीं है और रोग से बचने वाली मछली विषाणु के वाहक होती हैं और अनुप्रस्थ तथा लंबी दिशा में चलायमान होती हैं। इसलिए टीका लगाना, अंडशावक मछलियों, अंडों, डिंभकों और अंगुलिमीनों की नियमित रूप से जांच करना तथा इन सबके अतिरिक्त निदान किए गए नमूनों को निकालना हैचरियों और जलजीव पालन फार्मों में इस रोग को रोकने के प्रभावकारी उपाय हैं। रोग ग्रसित मछलियों में बीटानोडावाइरस के निदान के लिए भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने β नोडाडिटेक्ट नामक सिंगिल ट्यूब रिवेर्स ट्रान्स्क्रिप्शन-लूप-मीडिएटड आइसोथेर्मल एम्प्लिकेशन (सिंगिल ट्यूब आर टी-लैंप) किट विकसित किया है। यह किट अति विशिष्ट, संवेदनशील एवं तेज़ और एक घंटे से कम समय में एकल वाइरस का निदान करने में सक्षम भी है। सकारात्मक प्रतिक्रिया का हरी फ्लूरासेन्स से पता चलता है, जो नग्न आंखों से या पराबैंगनी प्रकाश (सुरक्षित गोगिल के उपयोग से) से देखा जा सकता है। इसके लिए थेर्मल साइक्लर या ट्रान्स-यु वी इलुमिनेटर जैसे परिष्कृत उपकरणों की आवश्यकता नहीं है। समुद्री अंडशावक मछलियों में द्रुत तरीके द्वारा रोगजनक से मुक्त अंडों और डिंभकों को सुनिश्चित करना इस उपकरण से लक्षित है और इससे समय पर रोगाणु का निदान किया जाता है और समुद्री पालन व्यवस्था में रोग के फैलाव को रोका जा सकता है। भारतीय समुद्र तटों पर पिंजरों में मछली पालन प्रचलित और लोकप्रिय होने के इस अवसर पर समुद्री मछलियों की संततियों का हैचरियों में बड़े पैमाने पर उत्पादन करना आर्थिक दृष्टि से आवश्यक है।

(एम.ए. प्रदीप समुद्री जैव प्रौद्योगिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

β-नोडाडिटेक्ट (आर टी-लैंप)		आर टी-नेस्टडे पी सी आर	
शामिल चरण	**अनुमानित लागत**	**शामिल कदम**	**अनुमानित लागत**
आर एन ए विलगन, आर टी-लैंप	390 रु./प्रतिक्रिया	आर एन ए विलगन, आर टी-पी सी आर, प्रथम चरण पी सी आर, नेस्टेड पी सी आर, एगरोस जेल इलेक्ट्रोफोरसिस	644 रु./प्रतिक्रिया
आवश्यक उपकरण	**अनुमानित लागत**	**शामिल कदम**	**आवश्यक उपकरण**
रेफ्रिजरेटेड सेन्ट्रिफ्यूज, वाटर बाथ	4.5 लाख रुपए	रेफ्रिजरेटड सेन्ट्रिफ्यूज, थेर्मल साइक्लर, ट्रान्स यु वी इलुमिनेटर, पावर पैक, होरिज़ोन्टल इलेक्ट्रोफोरेसिस यूनिट	12 लाख रुपए
शामिल चरण	**आवश्यक समय**	**शामिल कदम**	**आवश्यक समय**
आर एन ए विलगन, प्रतिक्रिया की तैयारी, आर टी-लैंप	2 घंटे 15 मिनट	आर एन ए विलगन, प्रतिक्रिया की तैयारी, आर टी-पी सी आर, प्रथम चरण पी सी आर, नेस्टेड पी सी आर, एगरोस जेल इलेक्ट्रोफोरसिस, ट्रान्स यु वी विजुअलाजेशन	6 घंटे 20 मिनट

फुलब्राइट फेलोशिप पर सुग्राहीकरण कार्यशाला

युनाइटड स्टेट्स इन्डिया एज्यूकेशन फाउन्डेशन (यु एस आइ ई एफ), नई दिल्ली की सहकारिता से भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 16 जून, 2016 को भारतीय नागरिकों के लिए फुलब्राइट फेलोशिप पर सुग्राहीकरण कार्यशाला आयोजित की गयी। यु एस आइ ई एफ, चेन्नई शाखा की सुश्री ललिता नागेश्वरी और सुश्री सुरंजना दास ने विभिन्न प्रकार की फेलोशिपों, पात्रता की कसौटी और आवेदन सफल रूप से तैयार करना आदि पर वैज्ञानिकों, तकनीकी कार्मिकों और अनुसंधान अध्येताओं को विवरण दिया। कार्यशाला में डॉ. आर. नारायणकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक, पी एम ई सेल अध्यक्ष रहे और डॉ. ग्रिन्सन जोर्ज, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कार्यशाला का समन्वयन कार्य किया।

कार्यशाला का दृश्य

हितधारकों की कार्यशालाओं का आयोजन

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मुख्यालय और विभिन्न क्षेत्रीय तथा अनुसंधान केन्द्रों में हितधारकों को प्रासंगिक अनुसंधान उपलब्धियों का विवरण देने और उनकी प्रतिक्रिया और सुझाव प्राप्त करने के उद्देश्य से हितधारकों की कार्यशालाएं आयोजित की गयीं। मुख्यालय, कोच्ची में 21 अप्रैल 2016 को कार्यशाला आयोजित की गयी। श्री जे.डी. दयालन, उप-कमांडेन्ट, तटरक्षक बल, श्री वी. दिनकरन, अध्यक्ष, मत्स्यफेड, श्री के.एम. एलियास, उप निदेशक (मात्स्यिकी), श्री एस. रामकृष्णन, सचिव, समुद्री खाद्य निर्यातक संघ, श्री सजी टी., मात्स्यिकी सहायक निदेशक सहित करीब 50 हितधारकों, निर्यातकों, गया है और प्रस्तुत किया जा रहा है। डॉ. रेखा जे. नायर, प्रधान वैज्ञानिक, तलमज्जी मात्स्यिकी प्रभाग और डॉ. एन. अश्वती, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एस ई ई टी टी डी ने केरल की समुद्री मात्स्यिकी पर की गयी परियोजनाओं से निर्गत परिणामों को प्रस्तुत किया। प्रतिभागियों ने अपने मूल्यवान अभिप्राय प्रकट किए और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ/ मात्स्यिकी विभाग द्वारा केरल के मछुआरों के कल्याण के लिए उठाई जाने वाली आवश्यक कार्रवाइयों पर भी सुझाव दिए। डॉ. पी.यु. ज़क्करिया, अध्यक्ष, तलमज्जी मात्स्यिकी प्रभाग ने कृतज्ञता प्रकट की।

और मत्स्यन रोध का प्रभाव आदि प्रमुख थे। मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में 19 अप्रैल 2016 को आयोजित हितधारकों की बैठक में यंत्रीकृत और देशी यानों के सेक्टरों के करीब 25 मछुआरों के अतिरिक्त पिंजरा मछली पालन, अलंकारी मछली पालन, महाचिंगट के वज़न बढ़ाव तथा ब्लूस्विम्मर केकड़ा पालन के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में 19 अप्रैल 2016 को आयोजित हितधारकों की बैठक में संस्थान के वैज्ञानिकों और तकनीकी कार्मिकों के अतिरिक्त डॉ. सी.के. मूर्ति, संयुक्त निदेशक (समुद्री), श्री गणपती भट, संयुक्त निदेशक (समुद्री मत्स्यन पोताश्रय), कर्नाटक के सभी तटीय जिलों

मुख्यालय में हितधारकों की बैठक

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में हितधारकों की बैठक

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में हितधारकों की बैठक

कारवार अनुसंधान केन्द्र में हितधारकों की बैठक

सभी मेखलाओं के मछुआरों के प्रतिनिधियों और ट्रेड यूनियनों के नेताओं ने कार्यशाला में भाग लिया और डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने कार्यशाला की अध्यक्षता की।

निदेशक ने राज्य में टिकाऊ मात्स्यिकी की प्रधानता पर ज़ोर दिया और यह व्यक्त किया कि हर राज्य में समुद्री मात्स्यिकी के टिकाऊ विकास पर ध्यान देने के उद्देश्य से वर्ष 2007 से लेकर राज्यवार अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की गयी हैं। उन्होंने यह भी प्रकाश डाला कि परियोजना के महत्वपूर्ण आविष्कारों को हितधारकों को प्रस्तुत करना, उनके साथ आपसी विचार-विमर्श करना, उनके सुझावों को सम्मिलित करता और अनुसंधान परियोजनाओं में अगर जरूरी हो तो आवश्यक परिवर्तन लाना इस कार्यशाला के आयोजन का लक्ष्य है। उन्होंने यह भी बताया कि पिछले वर्ष की हितधारक बैठक के सुझावों को 2015 अध्ययनों में सम्मिलित किया

कालिकट अनुसंधान केन्द्र में 23 अप्रैल 2016 को इसी तरह की बैठक आयोजित की गयी, जिसमें श्रीमती मरियम हसीना, उप निदेशक, मात्स्यिकी विभाग मुख्य अतिथि रही। मछुआरों और मछली पालनकारों ने भाग लिया। मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई में 19 अप्रैल 2016 को आयोजित बैठक में तमिलनाडु के तिरुवल्लूर, चेन्नई, कांचीपुरम, कडलूर और विल्लुपुरम जिलों तथा पुदुचेरी संघ राज्य क्षेत्र के मत्स्यन समुद्रायों के यंत्रीकृत और परंपरागत सेक्टरों से करीब 30 मछुआरों ने बैठक की चर्चाओं में भाग लिया। श्री एल.ए.जी. जूलियस एड्वेर्ड, मात्स्यिकी सहायक निदेशक, नीलंकरै भी उपस्थित थे। चर्चा किए गए मुद्दों में अब परिचालन किए जाने वाली बहुसंख्यक नावों से होनेवाली समस्याएं, जालाक्षि आकार के नियमन की प्रधानता, जलाशयों में अपशिष्ट छोडना, बड़ी संख्या में कृत्रिम भित्तियों का परिनियोजन, पिंजरा मछली पालन, समुद्री रैंचन

के सहायक मात्स्यिकी निदेशक, कर्नाटक मात्स्यिकी विकास निगम (के एफ डी सी) उपस्थित थे। मछुआरों के प्रतिनिधियों में परंपरागत मछुआरा नेता, गहरा सागर मछुआरा संघ, कोष-संपाश परिचालक संघ और आनाय जाल परिचालन संघ प्रमुख थे। समुद्री सेक्टर में उप्पुनूडा में पख मछली का पालन करने वाले मछुआरे लोग सम्मिलित थे। कारवार अनुसंधान केन्द्र में 22 अप्रैल 2016 को आयोजित बैठक में प्रत्याशी मछली पालनकारों और मछुआरा संघों के नेताओं ने भाग लिया। आजीविका के बदल उपाय तथा मछली उत्पादन बढ़ाए जाने के लिए पिंजरा मछली पालन पर बड़े पैमाने में जागरूकता कार्यक्रमों, मछली संततियों और खाद्य की उपलब्धता आदि पर उनकी आवश्यकताओं पर विस्तृत रूप से चर्चा की गयी।

मुख्यालय में संस्थान अनुसंधान परिषद की बैठक का आयोजन

आइ आर सी बैठक 2016 का दृश्य

मुख्यालय में 26 से 30 अप्रैल 2016 के दौरान संस्थान अनुसंधान परिषद की 23वीं बैठक आयोजित की गयी। बैठक के पहला दिन संबंधित प्रभागों में आयोजित बैठकों में अनुसंधान परियोजनाओं की स्थिति प्रस्तुत करके चर्चा की गयी। डॉ. के.एस. मोहम्मद, सदस्य सचिव, आइ आर सी ने विभिन्न क्षेत्रीय एवं अनुसंधान केन्द्रों से बैठक के लिए आए गए 134 वैज्ञानिकों का स्वागत किया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक एवं आइ आर सी के अध्यक्ष ने वर्ष 2015-16 के दौरान संस्थान की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और वर्ष 2016-17 के दौरान की जाने वाली कार्यविधियों का विवरण दिया। 27-30 अप्रैल की अवधि के दौरान प्रभागों के अध्यक्षों और विभिन्न इनहाउस तथा निधिबद्ध परियोजनाओं के प्रधान अन्वेषकों ने वर्ष के दौरान निष्पादित परियोजना कार्यों का प्रस्तुतीकरण किया और इसके बाद चर्चा हुई। 5 दिवसीय बैठक के अंतिम सत्र में संबंधित वैज्ञानिकों द्वारा किए जाने वाले 68 कार्य-बिन्दुओं को रिकार्ड किया गया।

महाराष्ट्र सरकार के प्रतिनिधियों का मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में दौरा

महाराष्ट्र सरकार के माननीय वित्त, योजना और ग्रामीण विकास मंत्री श्री दीपक वसंतराव केसरकारजी और लीना बनसोड, सी ई ओ, महाराष्ट्र राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन ने विशेषज्ञों की टीम के साथ 25 जून, 2016 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केन्द्र का मुआइना किया। महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले के लिए प्रस्तावित संपदा पर आधारित माइक्रोप्लानिंग और कार्यक्रम के कार्यान्वयन पर चर्चा करना दौरा का उद्देश्य था। प्रतिनिधियों ने महाराष्ट्र राज्य के सिंधुदुर्ग और रत्नगिरी जिलों में समुद्री संवर्धन कार्यविधियों के विकास के लिए केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली सहभागिता की सराहना की। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों को महाराष्ट्र, विशेषत: सिंधुदुर्ग के मछुआरों के हितार्थ संपन्न बनाने के बारे में चर्चा की गयी।

प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र प्रतिनिधियों के आगे केन्द्र की अनुसंधान गतिविधियों का विवरण देती हुई

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का संशोधित अधिदेश (16.05.2016 के प्रभाव से)

- भारतीय विशेष आर्थिक क्षेत्र में जलवायु और मानवीय हस्तक्षेपों सहित समुद्री मात्स्यिकी संपदाओं की निगरानी और निर्धारण करना और टिकाऊ समुद्री मात्स्यिकी प्रबंध योजनाओं का विकास।
- उत्पादन बढ़ाए जाने के लिए समुद्री संवर्धन में बुनियादी और कार्यनीतिपरख अनुसंधान।
- समुद्री मात्स्यिकी संपदाओं और आवासों पर भू-स्थानिक सूचना के खजाने के रूप में काम करना।
- प्रशिक्षण, शिक्षा और विस्तार के द्वारा परामर्श सेवाएं और मानव संपदा विकास।

केरल तट पर तारलियों की पकड़ में भारी गिरावट

अध्ययन से व्यक्त हुआ कि केरल के मात्स्यिकी सेक्टर में वर्ष 2015 के दौरान तारलियों की उपलब्धता में हुई तेज़ कमी की वजह से 150 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। इसके परिणामस्वरूप रोज़गार में 28.2% और मज़दूरी के हिस्से में 45.8% की कमी महसूस हुई। तारली कमी प्रति किलो ग्राम मूल्य में 26 से 65 रुपए की वृद्धि होने पर केरल के तारली उपभोक्ताओं पर पड़ने वाली मूल्य वृद्धि 60% है। हाल के वर्षों में तारली की पकड़ में हुई भारी गिरावट के कारण पर पता चला। इस पर किए गए अध्ययन से व्यक्त हुआ कि वर्ष 2012 के बाद तारली के प्रजनन समय और अरब सागर में उत्स्रवण जैसे पर्यावरण घटनाओं से गंभीर रूप से व्यवधान हुआ। इसके अतिरिक्त 2015 शक्तिशाली एल निनो का वर्ष था और इस वर्ष के दौरान बहुत कम बारिश और उच्च समुद्री सतह तापमान रिकार्ड किए गए थे। वर्ष 2010-12 के दौरान उच्च मत्स्यन दबाव और किशोर मछलियों की अधिक पकड़ की वजह से केरल की अरब सागर मेखला में तारलियों के स्टॉक पर बुरा असर पड़ा। अध्ययन से यह भी व्यक्त हुआ कि इस वर्ष तारलियाँ पकड़ की पूरी तरह पुनःप्राप्ति दूर की बात है।

(डॉ.वी.कृपा, अध्यक्ष, मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंध प्रभाग एवं टीम की रिपोर्ट)

संकर पेर्कुला क्लाउन मछली का भारी उत्पादन

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में फरवरी, 2016 में पहली बार पिकास्सो और प्लाटिनम क्लाउन मछलियों का सफलतापूर्वक संकर प्रजनन किया जा सका। डिंभकों को रोटिफर, *आर्टीमिया* नॉप्ली से खिलाए जाने के द्वारा अंगुलिमीनों के बड़े पैमाने में उत्पादन के लिए डिंभक पालन के नयाचार का मानकीकरण किया गया। डिंभकों से अंगुलिमीनों तक के पालन में 65% की अतिजीवितता हासिल की गयी। बढ़ती तथा बैन्ड पैटेर्न रिकार्ड किए गए। अब संकर पेर्कुला का भारी मात्रा में लगातार उत्पादन किया जा रहा है।

(ए.के. अब्दुल नाज़र, आर. जयकुमार, जी. तमिलमणी, एम. शक्तिवेल, पी. रमेशकुमार, जोएसन बी., अमीर कुमार समल, के.के. अनिकुट्टन और जी. हनुमंत राव, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

स्फुटनशाला में काली ओसेल्लारिस क्लाउन मछली का प्रजनन

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में काली ओसेल्लारिस या डार्विन फाल्स पेर्कुला, जो *आम्फीप्रियोन ओसेल्लारिस* का शानदार रंग रूप है, का प्रग्रहण अवस्था में प्रजनन करने में सफलता हासिल की गयी। जेट ब्लैक रंग में सफेद पट्टियों के शरीर वाली यह मछली प्रजाति उत्तर आस्ट्रेलिया के डार्विन के चारों ओर के सीमित भौगोलिक क्षेत्रों में पायी जाती है। प्रग्रहण स्थिति में इस मछली ने थोडे अंड दिए और बार बार के अंडजनन से अंडों की संख्या करीब 100 हो गयी। अंडों के निषेचन की अवधि 7 से 8 दिवस थी और 12 से 14 दिनों में डिंभकों से किशोरों तक कायांतरण हुआ। यह उच्च मूल्य वाली क्लाउन मछली है और विभिन्न प्रकार के रंगों वाली मछलियों के उत्पादन के लिए *ए.ओसेल्लारिस* के साथ इसका संकर प्रजनन किया जा सकता है।

पिकास्सो और प्लाटिनम क्लाउन मछलियों के अंडजनक

संकर पेर्कुला क्लाउन मछलियों के किशोरों का दृश्य

पाक उपसागर में प्रवालों का विरंजन

पाम्बन द्वीप के चारों ओर पाक उपसागर में अप्रैल-मई, 2016 की अवधि के दौरान प्रवाल भित्तियों में मध्यम से गंभीर स्तर में प्रवालों का विरंजन देखा गया। किसी भी तरह दबाव की स्थिति में प्रवाल अपने अंतःकोशिकीय शैवालों ज़ूज़ान्थेल्ले को बाहर निकाल देते हैं और सफेद दिखते हैं। इसे प्रवाल विरंजन कहा जाता है, यह जलवायु परिवर्तन से होने वाले तापीय दबाव का दृश्य संकेत है। पूरे विश्व के महासागर क्षेत्रों का 0.25% प्रवाल आवास तंत्र है और पूरे समुद्री जीवों के 25% को ये आवास प्रदान करते हैं। हर वर्ष भौगोलिक अर्थव्यवस्था में प्रवाल भित्तियों का योगदान करीब $29.8 बिलियन है, इसलिए लंबे समय तक गंभीर रूप से प्रवाल विरंजन से आवास व्यवस्था की सेवाओं में बुरा असर पड़ जाता है। ओलैकुड़ा मत्स्यन गाँव के

लाइट हाउस रीफ पर किए गए वर्तमान अध्ययन में प्रवालों की शाखाओं की अपेक्षा महापुंज अधिक रूप से प्रभावित हुए हैं। इससे पहले वर्ष 2012 में मलेशिया की रीफों में प्रवालों की गंभीर रूप से संवेदनशीलता पर रिपोर्ट की गयी थी। वर्ष 1982-83 के दौरान एल निनो के दौरान पहली बार और दूसरी बार वर्ष 2010 में प्रवालों का व्यापक रूप से विरंजन हुआ था। वर्तमान प्रवाल विरंजन भौगोलिक तौर पर तीसरी बार की घटना है और वर्ष 2014 में शुरू हुई यह घटना वर्ष 2017 तक होने का अनुमान लगाया जाता है।

(आर. शरवणन, एस. जास्मिन और के.के. जोषी, समुद्री जैवविविधता प्रभाग की रिपोर्ट)

पाक उपसागर में प्रवाल विरंजन का दृश्य

समुद्र में प्लास्टिक के कूड़ों पर सर्वेक्षण

गुजरात तट पर बैग (डोल) नेट पकड़ में प्लास्टिक की सामग्रियों की मात्रा का आकलन करके समुद्र में होने वाले प्लास्टिक कूड़ों के निर्धारण पर विस्तृत अध्ययन किया गया। सौराष्ट्र के जफ्राबाद, राजपरा, नवाबंदर और गोघला में सितंबर, 2015 से मई, 2016 तक की अवधि के दौरान अध्ययन अवलोकन किया गया। मछली पकड़ में *हारपडोन नेहेरियस, कोइलिया डसुमेरिया, ट्राइक्यूरस लेप्ट्यूरस, पाम्पस अर्जेन्टियस* आदि और क्रस्टेशियनों में *नेमटोपालमन टेन्यूपस, परापेनियोप्सिस स्कल्प्टिलिस, असेटस* प्रजाति आदि प्रमुख थीं। नवाबंदर में डोल जाल से 336.98 ग्रा./प्रति गिअर के कूड़े, इसके बाद जाफ्राबाद में 256.32 ग्रा./गिअर और राजपरा अवतरण केन्द्र में बहुत कम (105.36 ग्रा./गिअर) कूड़े पाए गए। कूड़ों में (यु एन ई पी, 2005) प्लास्टिक थैलियों और पाउचों सहित ग्रुप बी के कूड़े प्रमुख थे और इसके बाद (छोड़े गए जाल और नाइलोन की रस्सियाँ) ग्रुप ए के कूड़े भी कम नहीं थे, जिससे महासागरों में भूमि के अपशिष्टों की अधिकता का संकेत मिलता है।

(के.एस. सुखदाने, के. मोहम्मद कोया, एच.एम. भिन्ट, राजेश कुमार प्रधान, विनय कुमार वास, ज्ञान रंजन दास, डी. दिवु, के.आर. श्रीनाथ और पी. कलाधरन)

मछली पकड़ में मिले हुए प्लास्टिक अपशिष्टों का दृश्य

छंटाई के बाद प्लास्टिक कूड़े का दृश्य

शंबु पालन के लिए पडना के पश्चजल की वहन क्षमता का आकलन

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के कर्मचारियों की टीम ने पडना के पश्चजल में शंबु पालन करने के उद्देश्य से 17-20 मई, 2016 के दौरान पश्चजल की वहन क्षमता जानने केलिए परीक्षण किये। तीन स्टेशनों, ओरी, कायमपुरम और एडसिलाकाड़ में शंबुओं की आहार की मांग (माध्य *इन सिटु* पी ओ एम/शंबु/दिन) का आकलन करने के उद्देश्य से पहले ही डिज़ाइन किए गए पेर्स्पेक्स टैंकों, जिनमें इनलेट, आउटलेट और इनबिल्ट पम्प लगाए हुए हैं, स्थापित करते हुए निस्यंदन / चराई के परीक्षण आयोजित किए गए। हर एक स्टेशन की वहन क्षमता के आकलन का अनुमान अगला पालन मौसम शुरू होने से पहले केरल सरकार के मात्स्यिकी विभाग को प्रदान किया जाएगा।

ओरी में इन सिटु चराई परीक्षण का दृश्य

वेरावल में टी एस पी पिंजरा फसल संग्रहण मेला-2016 का आयोजन

संग्रहित महाचिंगटों के साथ सिदी आदिवासी लाभार्थियों का दृश्य

वेरावल में आदिवासी उप योजना (ट्राइबल सब प्लान) के पिंजरों का चतुर्थ फसल संग्रहण मेला प्रभास पटान के पालन स्थान में 22 अप्रैल, 2016 को समुद्री कृषि सम्मेलन के रूप में आयोजित किया गया। निर्यात निरीक्षण एजेन्सी, समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के अतिरिक्त नीलकमल ग्रुप (जलजीव पालन क्षेत्र की एक निजी कंपनी) के प्रधिनिधियों ने भी भाग लिया। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के आदिवासी उप योजना की परियोजना के अंदर पिंजरा मछली पालन पर निदर्शन, प्रशिक्षण तथा पालन परीक्षणों के पश्चात गुजरात के 'सिदी' आदिवासियों के लिए महाचिंगट पालन आजीविका का वैकल्पिक उपाय बन गया है। टी एस पी कार्यक्रम की शुरुआत से लेकर 'भारत आदिम जुत मत्स्य उद्योग मंडली-तलाला', जो एक 'सिदी' आदिवासी संघ है, इसका सहभागी बन गया है। वर्तमान पालन कार्य में कुल 11 पिंजरों में समुद्री शैवाल *कापाफाइकस अल्वरेसी* के साथ 3-4 महीनों की पालन अवधि तक विभिन्न आकार ग्रुपों के महाचिंगटों का संभरण किया गया और विपणन योग्य आकार तक बढ़ने पर फसल संग्रहण किया गया। महाचिंगटों द्वारा निहित बढ़ती विभिन्नता के कारण आवधिक रूप से आंशिक फसल संग्रहण भी किया गया। संग्रहण किए गए कुल 859 कि.ग्रा. महाचिंगटों में से 72% का आकार 200 ग्राम से अधिक था और इन्हें प्रति किलो ग्राम के लिए 1200 रुपए के बाज़ार मूल्य पर बेचा गया। 200 ग्राम से कम आकार की मछलियों को प्रति किलो ग्राम के लिए 800 रुपए के बाज़ार मूल्य पर बेचा गया। बिक्री की आय आदिवासी ग्रुप के सदस्यों के बीच बांटी गयी।

(डी. दिवु, सुरेश कुमार मोज्जादा, ज्ञान रंजन दास, के.आर. श्रीनाथ, विनय कुमार वास, राजेश कुमार प्रधान, के.एस. सुखदाने, एम.के. फोफान्डी और के. मोहम्मद कोया की रिपोर्ट)

आंध्रा प्रदेश में पिंजरा मछली पालन प्रदर्शन में मछली फसल संग्रहण

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र ने कृष्णा जिले के नागयलंका में कृष्णा नदी के पश्चजल में समुद्री बास और सिल्वर पोम्पानो मछलियों के पिंजरा पालन का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया। भा कृ अनु प के वित्त पोषण से आयोजित समुद्री संवर्धन पर अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना (ए आइ एन पी) के भाग के रूप में श्री टी. रघु शेखर के सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान लकड़ी के 9 पिंजरों (4x4x2 मी. आकार) और एच डी पी ई के 2 पिंजरों (6 मी. के आकार में वृत्ताकार) सहित कुल 13 पिंजरे लगाए गए थे, इनमें अगस्त से नवंबर, 2015 की अवधि के दौरान 6 इंच के आकार वाले 500 समुद्री बास मछलियों का संभरण किया गया। इन मछलियों को खाने के लिए कचरा मछली दी गयी और 5-8 महीनों में समुद्री बास मछली 0.5 से 1 किलो ग्राम तक बढ़ गयी। आंध्रा प्रदेश सरकार के डिप्टी स्पीकर माननीय श्री मंडली बुद्दा प्रसाद ने 15 मई 2016 को फसल संग्रहण का उद्घाटन किया। डॉ. इमेल्डा जोसफ, प्रभारी अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग, डॉ. शुभदीप घोष, प्रभारी वैज्ञानिक, विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र, डॉ. टी.वी. रामण्णा, डीन, मात्स्यिकी कॉलेज और कृष्णा और गुंटूर जिलों के राज्य मात्स्यिकी

विभाग के उप निदेशक भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त एम.वी.के.आर. मात्स्यिकी पोलीटेकनीक के छात्रों, नागयलंका के प्रगतिशील जलजीव पालनकारों, विभिन्न मछुआरा संघों के सदस्यों और पड़ोसी गाँवों के आम लोगों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। संग्रहित 3 टन समुद्री बास मछली को स्थानीय बाज़ार में मृत मछलियों के 270 रुपए प्रति किलो ग्राम के बजाय जीवित अवस्था में 340 रुपए प्रति किलो ग्राम के मूल्य पर बेचा गया। बैठक में श्री मंडली बुद्दा प्रसाद ने भविष्य में पिंजरा प्रौद्योगिकी द्वारा उच्च मूल्य वाली मछली प्रजातियों के पालन के लिए मछुआरों को सहायता देने का वादा किया। डॉ. इमेल्डा जोसफ ने बताया कि मछली पालन की खूब प्रत्याशा होने वाले आंध्रा प्रदेश में पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकी का लाभ लेने के लिए मछुआरों को प्रोत्साहन देने में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ भी इच्छुक है।

(शुभदीप घोष, शेखर मेघराजन, रितेश रंजन, बिजी सेवियर, बिश्वजीत दास और इमेल्डा जोसफ की रिपोर्ट)

नदीमुख के पिंजरों से फसल संग्रहण

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित अनुकूलन किए गए, देशी नदीमुख पिंजरों में किया गया पख मछली पालन सफल बन गया और तट के लोगों के बीच प्रचारित हो गया। मछुआरों ने अपनी आजीविका के वैकल्पिक उपाय के रूप में प्रौद्योगिकी अपनायी की और हैचरियों तथा प्राकृतिक रूप से प्राप्त मछली संततियों से *लाटस कालकारिफर*, *लूटजानस अर्जेन्टिमाकुलेटस* और *कारांक्स सेक्सफासियाटस* जैसी मछलियों का पालन शुरू किया। बिन्दूर के येदमविनहोल नदीमुख के एक पिंजरे (6x2x2 मी.) से 18 मई 2016 को 900 किलो ग्राम समुद्री बास मछली का फसल संग्रहण किया गया और प्रति किलो ग्राम के लिए 420 रुपए का फार्म गेट मूल्य प्राप्त हुआ और इससे कुल 3.78 लाख रुपए प्राप्त हुए।

(के.एम. राजेश, सुजिता तोमस, ए.पी. दिनेशबाबु, प्रतिभा रोहित और जी.डी. नटराजा, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

बिन्दूर के नदीमुख से संग्रहित समुद्री बास मछलियों का दृश्य

तूत्तुकुडी के सिप्पिकुलम में कोबिया मछली का फसल संग्रहण

तूत्तुकुडी के सिप्पिकुलम में स्थापित समुद्री पिंजरा जाल से 7 अप्रैल 2016 को मछली फसल संग्रहण किया गया। लगभग 7 महीनों की अवधि तक पालन किया गया और संग्रहण के समय मछली का भार 1.8 से 4.2 कि.ग्रा. के बीच था। संग्रहण के पहले चरण में करीब 200 कि.ग्रा. कोबिया मछली का संग्रहण किया गया और प्रति किलोग्राम के लिए 300 रुपए के फार्म गेट मूल्य पर बेची गयी। फसल संग्रहण के दौरान डॉ. पी.पी. मनोजकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक ने सभा का स्वागत किया। श्री आइसक जयकुमार, सहायक मात्स्यिकी निदेशक (समुद्री) ने समुद्री पिंजरा मछली पालन के लिए राज्य तथा केन्द्र सरकार द्वारा दी जाने वाली विभिन्न योजनाओं के बारे में मछुआरों को बताया। डॉ. सी.एस. षाइन कुमार, उप निदेशक, एम पी ई डी ए ने गाँव में जीवित तथा हिमशीतित समुद्री मछलियों का निर्यात करने के लिए स्वास्थ्यकर मछली व्यवहार केन्द्र और आवश्यक सुविधाओं की संभावनाओं पर विवरण दिया। सिप्पिकुलम के रेव. राजा रोड्रिगो ने समुद्री पिंजरा मछली पालन करने वाले मछुआरों की सराहना की और अधिक मछुआरों ने इस तरह के मछली पालन उद्यम में आगे आने की आशा प्रकट की। श्री आर. रेक्सोन, श्री एम. रायप्पन और श्री एस. मोचिया, जो सिप्पिकुलम के समुद्री पिंजरा मछली पालन करने वाले हैं, ने मछली पालन में अपने अनुभव साझा किये। कार्यक्रम में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के कर्मचारियों के अतिरिक्त सिप्पिकुलम के मछुआरा सहकारी संघों के नेताओं, समुद्री पिंजरा मछली पालनकारों और अन्य मछुआरा परिवारों ने भाग लिया।

(सी.कालिदास, एल.रंजित, पी.पी.मनोजकुमार, आइ.जगदीश और एम.कविता, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

कोबिया मछली संग्रहण और संग्रहित मछली को मछुआरों को प्रदान करने का दृश्य

स्वयं सहायता समूह द्वारा पालन की गयी शुक्तियों का सफलतापूर्वक फसल संग्रहण

एरणाकुलम जिले के मूत्तकुन्नम और पुत्तनवेलिकरा के स्वयं सहायता समूहों द्वारा खाद्य शुक्ति *क्रासोस्ट्रिया माड्रासेन्सिस* का पालन किया गया और मई-जून 2016 के दौरान फसल संग्रहण किया गया। लगभग 15 फार्म थे और हर एक से 250-300 शुक्ति रस्सियों का फसल संग्रहण करके मूत्तकुन्नम के मूल्य वर्धन प्लान्ट यूनिट में इनका निर्मलीकरण किया गया। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के आउटलेट से इनका विपणन किया गया। करीब 86.7 ± 25.7 मि.मी. की औसत कवच लंबाई वाली कुल 23.8 टन शुक्तियों के लिए 600 रुपए/शुक्ति मांस की दर पर मूल्य प्राप्त हुआ।

शुक्तियों का निर्मलीकरण करने के बाद मूत्तकुन्नम के वी ए पी यूनिट में प्रसंस्करण करने का दृश्य

सिप्पिकुलम में मॉडल समुद्री पिंजरा फार्म में कोबिया मछली अंडशावक (ब्रूडस्टॉक) विकास का प्रारंभ

सिप्पिकुलम में कोबिया मछली के अंडशावक विकास कार्यक्रम के लिए प्लवमान ड्रमों और चुने गए स्थानों में लंगर के साथ वृत्ताकार गाल्वनाइज्ड लोहे के जाल (5 मी. का व्यास और 3 मी. की गहराई, गाँठ जालाक्षियों के 30 मि.मी. और 60 मि.मी. के आंतरिक तथा बाहरी जाल) पिंजरे स्थापित किए गए। मछुआरे भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन से समुद्री पिंजरा जाल का अनुरक्षण कर रहे हैं। आहार के रूप में दिन में दो बार कुल जैव भार का 3-5% कम मूल्य वाली मछलियों के टुकड़े या काटे हुए कटलफिश अपशिष्ट दिए जाते हैं। पानी का विनिमय सुनिश्चित करने के लिए जाल गंदा होने की जांच करने के बाद जाल बदल दिए गए। मछली के आकार की वृद्धि का मापन और नर और मादा लिंग निर्णय के लिए मासिक तौर पर सैंप्लिंग किया गया। करीब 6 महीने की पालन अवधि के दौरान मछली 5 से 8 किलोग्राम तक बढ़ गयीं।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ सी आइ टी ई एस के पंजीकृत वैज्ञानिक संस्थानों की सूची में सम्मिलित

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एम ओ ई एफ एवं सी सी), भारत सरकार ने (अपने अ.शा.पत्र सं. 4-23/2015/डब्लियु एल दिनांक 02 जून 2016 द्वारा) यह संप्रेषित किया कि भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ को खतरे में पड़ी वन्य वनस्पति और जीव जातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सम्मेलन (सी आइ टी ई एस) के अनुच्छेद VII, खंड 6, जो संकल्प कोन्फ. 11.15 (rev. CoP 12) के साथ पडित, के तहत वैज्ञानिक संस्थानों की सूची में पंजीकरण संख्या (आइ एन 034) प्रदान की गयी है। इससे गैर वाणिज्यिक ऋण, अंशदान या वैज्ञानिकों या भविष्य के अनुसंधान हितों के लिए अधिसूचित प्राधिकरण द्वारा पंजीकृत वैज्ञानिक संस्थानों के बीच विनिमय के लिए छूट मिल जाती है। इससे भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ संस्थानों की विशिष्ट क्लब में प्रवेश करता है ताकि संस्थान जीवित नमूनों को प्राप्त, विनिमय, संभरण, परिरक्षण कर सकता है और संग्रहालय के लिए या वर्गिकी विज्ञान और नमूना संरक्षण से जुड़े हुए अनुसंधानों के लिए नमूनों का परिरक्षण कर सकता है।

चेन्नई में समुद्र जल चढ़ने से मछुआरों के घरों पर बुरा प्रभाव

चेन्नई में जून, 2016 के द्वितीय सप्ताह के दौरान लगभग 45-55 कि.मी. प्रति घण्टा की गति और 10-12 फीट ऊंची लहरों के साथ शक्तिशाली दक्षिण-पश्चिम हवा से पट्टिणापक्कम के करीब 10-12 घरों में नुकसान हुआ और संपत्तियों, मत्स्यन यानों, जालों को भी गंभीर रूप से क्षति हुई। इससे मत्स्यन और बाज़ार लगभग 20 दिनों तक बंद पड़े जिसके फलस्वरूप मछुआरों की आजीविका पर बुरा असर पड़ा। समुद्र के विक्षोभ से तमिल नाडु के कई तटीय भागों में इसी तरह समुद्र जल चढ़ने से विनाश हुआ। पट्टिणापक्कम में समुद्र जल चढ़ने से हुए मत्स्यन दिनों की कमी, संपत्तियों, मत्स्यन यानों एवं जालों तथा घरेलू सामग्रियों के नाश से 44.4 लाख रुपए का नुकसान आकलित किया गया। अध्ययन से प्राकृतिक विपत्तियों के प्रति मछुआरों की तैयारी का अभाव व्यक्त हुआ। अतः समुद्र से दूर सुरक्षित स्थानों तक वास स्थान बदलाने के लिए मछुआरों के बीच जागरूकता लाना आवश्यक है।

पट्टिणापक्कम मछुआरा गाँव में समुद्र जल चढ़ने से हुए विनाश का दृश्य

(आर. गीता, इंदिरा दिविपाला, शोभा जो किषकूडन और जे.एम. शांती की रिपोर्ट)

विश्व पर्यावरण दिवस और विश्व महासागर दिवस मनाया गया

मांगलूर मत्स्यन पोताश्रय में आयोजित विश्व महासागर दिवस पर जागरूकता अभियान का दृश्य

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र द्वारा 8 जून 2016 को विश्व पर्यावरण दिवस और विश्व महासागर दिवस मनाया गया। मांगलूर मात्स्यिकी पोताश्रय में महासागरों और संपदाओं के परिरक्षण पर ज़ोर देते हुए महासागर में कचरा कम करना विषयक अभियान आयोजित किया गया। इस अवसर पर सक्रिय मछुआरों और आस-पास की स्कूलों के छात्रों ने भी कर्मचारियों के साथ सहयोग दिया। इसके साथ स्वस्थ महासागर, स्वस्थ ग्रह विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया और इसके बाद नम्मा नदी, नदीमुखा मातु सागरवन्नु स्वच्छा गोलिसुवा जागृति अभियाना (हमारी नदियों, नदीमुखों और महासागरों को स्वच्छ बनाने पर जागरूकता) विषय पर भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के कर्मचारियों द्वारा तैयार किए गए पोस्टर का लोकार्पण किया गया। इसके पश्चात् अनुसंधान केन्द्र के कर्मचारियों एक नाटक प्रस्तुत किया।

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में आयोजित विश्व महासागर दिवस समारोह में भाग लिए गए छात्रों का दृश्य

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में 8 जून 2016 को विश्व महासागर दिवस पर याद दिलाने के उद्देश्य से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र, प्रभारी वैज्ञानिक ने विश्व महासागर दिवस मनाए जाने के इतिहास पर मरिक्कयारपट्टिणम के पंचायत यूनियन प्राइमरी स्कूल के छात्रों को जानकारी दी। इस अवसर पर आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में स्कूल के छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ. आर. शरवणन, वैज्ञानिक, समुद्री जैवविविधता प्रभाग ने कार्यक्रम आयोजित किया।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कार

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची को वर्ष 2014-15 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा ट्रोफी (द्वितीय स्थान) प्राप्त हुई। सी एम एफ आर आइ समाचार-कडलमीन के लिए उत्कृष्ट गृह पत्रिका (2014-15) रोलिंग ट्रोफी (चतुर्थ स्थान) भी प्राप्त हुई। आयकर कार्यालय, कोच्ची में 12 मई, 2016 को आयोजित बैठक में श्री पी.आर. रविकुमार, आइ आर एस, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, कोच्ची, प्रोफसर डॉ. आर. शशिधरन, भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, के यु एस ए टी और श्री पी. विजयकुमार, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोच्ची की उपस्थिति में पुरस्कार प्रदान किए गए।

श्री वी. मोहनन, प्रशासनिक अधिकारी रोलिंग ट्रोफी प्राप्त करने का दृश्य

सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केन्द्र को कारवार में स्थित केन्द्रीय सरकार कार्यालयों में बेहत्तर ढंग से राजभाषा का कार्यान्वयन करने के उत्कृष्ट संस्थान पुरस्कार प्राप्त हुआ। कारवार न रा का स की 30 जून 2016 को आयोजित अर्ध वार्षिक बैठक में डॉ. कृपेश शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक ने श्री टेकचंद, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, बंगलूरु से रोलिंग ट्रोफी और प्रमाण पत्र प्राप्त किए।

डॉ. कृपेश शर्मा द्वारा पुरस्कार प्राप्त करने का दृश्य

हिन्दी कार्यशालाएं

मुख्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए 14 जून, 2016 को बोलचाल की हिन्दी विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी। श्रीमती लता के.वी., वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, आयकर कार्यालय, कोच्ची ने सत्र का आयोजन किया। इसी तरह मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में भी 29 जून 2016 को कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें 21 कर्मचारियों ने भाग लिया। विषिंजम में 25 जून 2016 को हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी। श्री सोमशेखरन नायर, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, बी एस एन एल ने शब्दावली का परिचय, नेमी कार्यालयीन कार्यों में उपयोग की जाने वाली टिप्पणियाँ आदि पर कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र के कर्मचारी सदस्यों के लिए 27 मई, 2016 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी। श्रीमती श्यामलता, हिन्दी अनुवादक, हेवी वाटर प्लान्ट, तूत्तुकुडी ने कार्यशाला का संचालन किया।

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में आयोजित हिन्दी कार्यशाला का दृश्य

राजभाषा निरीक्षण

श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, भा कृ अनु प, नई दिल्ली ने 6 अप्रैल, 2016 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के राजभाषा कार्यान्वयन और कर्मचारियों द्वारा किए गए हिन्दी कार्यों का निरीक्षण किया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक 11 अप्रैल, 2016 को डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक की अध्यक्षता में में आयोजित की गयी। बैठक में जनवरी-मार्च, 2016 की तिमाही के दौरान की राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों की समीक्षा की गयी।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया

मुख्यालय में कर्मचारियों की सहभागिता का दृश्य

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में 21 जून, 2016 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। श्रीमती स्मिता के., वैयक्तिक सहायक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ को मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रमों के नोडल अधिकारी के रूप में नामित किया गया। आर्ट ऑफ लिविंग फाउन्डेशन, बंगलूरु के श्री सजी यूसफ निसान और श्री के. विजयकुमार ने मुख्यालय में योग के सत्रों का संचालन किया।

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में आर्ट ऑफ लिविंग फाउन्डेशन के सदस्यों श्री शंकर पान्डियन, श्री बोस, श्री दुरैराज, श्री कुमारवेल और श्रीमती गोपीलक्ष्मी द्वारा योग पर भाषण और प्रदर्शन आयोजित किया गया। मद्रास अनुसंधान केन्द्र में इशा लाइफ के स्वयंसेवकों द्वारा ISHA 'UPA YOGA' अभ्यास आयोजित किए, जिसमें 35 कर्मचारी सदस्यों ने भाग लिया। टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में आर्ट ऑफ लिविंग, तूत्तुकुडी शाखा के योग आचार्य श्री ए.पुगाल कण्णन और उनके सहायक श्री इय्यप्पन ने प्रतिभागियों को योग आसन सिखाया।

मुख्यालय में योग पर भाषण देने का दृश्य

मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में याग का दृश्य

कालिकट अनुसंधान केन्द्र में योग आचार्य श्री षिजु ने योग का प्रदर्शन किया। कारवार अनुसंधान केन्द्र में शिक्षा विभाग के सामुदायिक संसाधन व्यक्ति एवं योग आचार्य श्री अशोक बडकर ने विभिन्न योग आसनों और इनके गुणों पर भाषण दिया और इसके पश्चात् योग पर सत्र चलाया। मांगलूर केन्द्र में योग समारोह के दौरान विवेकानन्द ट्रस्ट, कन्याकुमारी के योग आचार्य श्री मोहन कुम्बलेकर के नेतृत्व में योग अभ्यास आयोजित किया गया।

मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई के सहयोग से संयुक्त रूप से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में 19 जून, 2016 को आयुष मंत्रालय द्वारा विकसित फिल्म, सामान्य योग प्रोटोकाल (हिन्दी में) का प्रदर्शन किया और इसके बाद योगाचार्य श्री अभय थाकर के नेतृत्व में सामान्य योग प्रोटोकाल का अभ्यास आयोजित किया गया। विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में प्रसिद्ध शिव सूर्य दिव्य योग स्कूल, तिरुवनन्तपुरम के योग आचार्य श्री सूर्य गुरुजी और आचार्य निखिल के नेतृत्व में बडे उत्साह से योग दिवस मनाया गया।

उप योग पर भाषण

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में याग का दृश्य

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में याग का दृश्य

मद्रास अनुसंधान केन्द्र में याग का दृश्य

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में याग का दृश्य

टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में याग का दृश्य

सफाई से पहले

सफाई के बाद

माननीय प्रधान मंत्री के स्वच्छ भारत मिशन का अनुपालन करते हुए मुख्यालय में 18 मई, 2016 से लेकर 4 जून, 2016 तक विभिन्न कार्यक्रमों के साथ स्वच्छ भारत पखवाड़ा आयोजित किया गया। इस दौरान नगर के विभिन्न स्थानों में स्वच्छता अभियान आयोजित करने के पश्चात् स्वच्छ भारत विषय पर 'बच्चों के लिए स्वच्छता एक दर्पण' विषयक पेइन्टिंग प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी। इसमें 5-10, 11-15 और 16-20 के आयु वर्ग के कुल 29 बच्चों ने भाग लिया। डॉ. एस. अय्यप्पन, भूतपूर्व महानिदेशक, भा कृ अनु प और डॉ. सी. रविशंकर, निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी और डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने विजेताओं और प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए।

डॉ. एस. अय्यप्पन, भूतपूर्व महानिदेशक, भा कृ अनु प प्रतियोगिता के विजेताओं के साथ

कालिकट अनुसंधान केन्द्र में डॉ. पी.के. अशोकन, प्रभारी वैज्ञानिक के नेतृत्व में सभी कर्मचारी सदस्यों की सक्रिय सहकारिता से 17 मई, 2016 से 31 मई, 2016 तक स्वच्छता संबंधी गतिविधियाँ आयोजित की गयीं। इस दौरान 24 मई, 2016 को प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और 30 मई, 2016 को पौधारोपण भी किया गया। इसके अतिरिक्त 31 मई, 2016 को डॉ. दिनेशन चेरुवत, मात्स्यिकी संयुक्त निदेशक, केरल राज्य मात्स्यिकी विभाग, कोषिकोड़ द्वारा 'उत्तर केरल की आर्द्र भूमि की पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं' विषय पर आमंत्रित भाषण आयोजित किया गया। वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में कार्यालय के परिसर से भीडिया चौक, वेरावल मत्स्यन पोताश्रय और परिसर में 16 मई, 2016 से 30 मई, 2016 तक आयोजित की गयी स्वच्छता गतिविधियों में केन्द्र के सभी कर्मचारियों ने सहयोग दिया। मद्रास अनुसंधान केन्द्र में 18 मई, 2016 से 4 जून, 2016 तक गहन स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया। डॉ. मार्गरट मुत्तुरतिनम, प्रधान वैज्ञानिक के नेतृत्व में 18 मई, 2016 को प्रतिज्ञा ली। इस अवधि के दौरान कार्यालय परिसर और कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला परिसर और कडलूर एवं ओंगोल क्षेत्र केन्द्रों तथा इनके परिसर साफ एवं स्वच्छ रखने पर ज़ोर दिया। कोवलम क्षेत्र केन्द्र में 28 मई, 2016 को स्वच्छता अभियान चलाया गया, जिसमें केन्द्र के सभी कर्मचारियों ने भाग लिया। मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में 31 मई, 2016 से 4 जून, 2016 तक स्वच्छता की गतिविधियाँ आयोजित की गयीं और सभी वैज्ञानिकों और कर्मचारियों ने कार्यालय परिसर, आवास आदि की सफाई की।

स्वच्छ भारत अभियान से हमारे परिसर की सफाई के लिए कचरा निपटाने की परिकल्पना की जाती है। कृषि विज्ञान केन्द्र, एरणाकुलम ने समुद्री मछली अपशिष्ट से फिशलाइज़र नामक जैविक उर्वरक के निर्माण का प्रारंभ किया। एरणाकुलम के मछली बाज़ार के मछली अपशिष्ट सार्वजनिक जलाशयों, रास्ते के किनारों आदि पर छोड़ दिए जाते थे, जिससे आम जनता को नुकसान होता है। ये अपशिष्ट नियमित रूप से संग्रहित करते हुए खाद बनाया जाता है। अब तक 1.5 मेट्रिक टन अपशिष्टों का प्रसंस्करण किया गया और 900 किलो ग्राम फिशलाइज़र का उत्पादन करके संस्थान में स्थित ए टी आइ सी-के वी के बिक्री काउन्टर द्वारा बेचा गया। राज्य के विभिन्न भागों से होने वाली फिशलाइज़र की बढ़ती हुई मांग की पूर्ति के लिए मुलवुकाडु में एक सैटलाइट उत्पादन केन्द्र स्थापित किया गया, जहाँ प्रति माह 600 किलो ग्राम फिशलाइज़र का उत्पादन किया जाता है। फिशलाइज़र का उपयोग करते वक्त कम पानी आवश्यक होता है, इसके साथ संतुलित फसल को स्थूल एवं सूक्ष्म पोषक तत्व मिलते हैं जिसकी वजह से अच्छी वृद्धि के साथ साथ अच्छी किस्म की उपज भी मिलता है। कुछ फसलों साथ इसके उपयोग से पौधों के जट क्षेत्रों में फायदेमंद माइक्रोबों के समर्थन से उपज में 40-50% वृद्धि होती है।

SWACHH BHARAT ABHIYAN

Fortnight Celebration of Cleanliness Drive

"स्वच्छता अभियान"

प्रशिक्षण कार्यक्रम

पिंजरा मछली पालन पर प्रशिक्षण

सी डी ए द्वारा चुने गए मछुआरों के लिए 5 से 7 और 9 से 11 मई, 2016 के दौरान दो सत्रों में तटीय विकास प्राधिकरण (सी डी ए), कर्नाटक सरकार द्वारा प्रायोजित 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के दोनों सत्रों का समापन कार्यक्रम 9 मई, 2016 को आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि श्री निवेदित आल्वा, अध्यक्ष, सी डी ए ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। डॉ. वी.एन. नाइक, सचिव, जिला विज्ञान केन्द्र ने बधाई भाषण दिया।

प्रदर्शनियाँ

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र ने अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता समारोह के अवसर पर 22 मई, 2016 को आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया। संयुक्त राष्ट्र की सहभागिता से राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण की सहकारिता से पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा 'टिकाऊ आजीविका के लिए जैवविविधता मुख्य धारा' विषय पर प्रदर्शनी आयोजित की गयी। इसके लिए महाराष्ट्र राज्य जैवविविधता बोर्ड ने सहायता प्रदान की। श्री प्रकाश जावदेकर, माननीय केन्द्रीय राज्य पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री, श्री चेन्नामनेनी विद्यासागर रावु, माननीय राज्यपाल, महाराष्ट्र, डॉ.बी.मीनाकुमारी, अध्यक्ष, राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण ने यश्वंतराव चवान सभा भवन, मुम्बई में आयोजित प्रदर्शनी का दौरा किया।

श्री प्रकाश जावदेकर, माननीय केन्द्रीय राज्य पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ प्रदर्शनी स्टाल का दौरा करने का दृश्य

विशिष्ट व्यक्तियों का दौरा

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प ने 7 मई, 2016 को संस्थान के मुम्बई अनुसंधान केन्द्र का दौरा किया और केन्द्र में किए जाने वाले अनुसंधान कार्यों की सराहना की। भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, वर्सोवा में 6 मई, 2016 को आयोजित विचार-विमर्श बैठक में प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र और कर्मचारियों ने भाग लिया।

डॉ. बी. मीनाकुमारी, अध्यक्ष, राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण ने 20 मई, 2016 को मुम्बई अनुसंधान केन्द्र का दौरा किया।

डॉ. रीता पान्डे, प्रोफेसर, सार्वजनिक वित्त एवं नीति राष्ट्रीय संस्थान, (सी डी ए), नई दिल्ली ने 5 मई, 2016 को मुम्बई अनुसंधान केन्द्र का दौरा किया।

मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में महानिदेशक, भा कृ अनु प का दौरा

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में दौरा किए गए विशिष्ट व्यक्तियों में 5 अप्रैल, 2016 को डॉ. एस. दाम रॉय, निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ ए आर आइ, पोर्ट ब्लेयर, 6 अप्रैल, 2016 को डॉ. एस.के. चक्रबर्ती, निदेशक, भा कृ अनु प-सी पी आर आइ, शिमला, हिमाचल प्रदेश, 3 मई, 2016 को डॉ. सोम दत्त, संपादक, डी के एम ए, नई दिल्ली और 23.05.2016 को श्री हरीश नायर, उपसचिव, भा कृ अनु प, नई दिल्ली प्रमुख थे।

नयी फसल बीमा योजना पर जिला स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम

जागरूकता कार्यक्रम के उद्घाटन कार्यक्रम का दृश्य

प्रोफसर के.वी. तोमस, सांसद ने नयी फसल बीमा योजना, प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (पी एम एफ बी वाइ) के बारे में जिला स्तर पर आयोजित जागरूकता कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कृषि विज्ञान केन्द्र, एरणाकुलम द्वारा 28 जून, 2016 को कोट्टुवल्ली में कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्रीमती के.के.शांता, अध्यक्ष, कोट्टुवल्ली ग्राम पंचायन अध्यक्ष रही। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, डॉ. षिनोज सुब्रमण्यन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृ वि कें, श्री पुष्पराज ऐंजलो और वार्ड के सदस्य कार्यक्रम में उपस्थित थे। आगामी खरीफ 2016 मौसम में योजना का कार्यान्वयन किया जाना है, तब किसानों के प्रीमियम का हिस्सा कम होता है। फसलों पर बीमा कवरेज का कैपिंग रद्द कर दिया गया है। पहली बार बाढ़ को स्थानीय खतरों की सूची में जोड़ा गया है। इसके अतिरिक्त, चक्रवात और बेमौसम बारिश को भी पूरे देश के लिए लागू किए जाने के अनुसार जोड़ा गया है।

कृ वि कें द्वारा दो कृषि उत्पादक कंपनियों का प्रारंभ

कृषि उत्पादों से जुड़े हुए मामलों जैसे मूल्य में उतार-चढ़ाव, कृषि उत्पादों के भंडारण एवं विपणन आदि, पर सामूहिक दृष्टिकोण बढ़ाए जाने के उद्देश्य से भा कृ अनु प-कृ वि कें, एरणाकुलम राष्ट्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास बैंक (एन ए बी ए आर डी) की वित्तीय सहायता से किसान उत्पादक कंपनियों का प्रारंभ कर रहा है। इसके भाग के रूप में कृ वि कें ने कई स्वयं सहायता समूह और किसान क्लब शुरू किए हैं। जायफल और *पोक्काली* पर दो कंपनियाँ प्रारंभ की जाने वाली हैं। एन ए बी ए आर डी ने कृ वि कें, एरणाकुलम को संस्थाओं को बढ़ावा देने के उत्पादक संगठन (पी ओ पी आइ) के रूप में पहचाना है। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में 2 मई, 2016 को आयोजित बैठक में एरणाकुलम जिले के पचास प्रगतिशील *पोक्काली* किसानों ने भाग लिया। इसी तरह 8 जून, 2016 को आयोजित बैठक में कोतमंगलम ब्लोक के लगभग चालीस प्रगतिशील जायफल किसानों ने भी भाग लिया।

'बारिश शेल्टरों में जैव तरकारी पैदावार' पर प्रशिक्षण

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा 25 और 26 मई, 2016 को बारिश शेल्टरों में जैव तरकारी पैदावार विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें कुल 49 व्यक्तियों ने भाग लिया। बारिश का मौसम तरकारी पैदावार के लिए अनुकूल नहीं है, क्योंकि इस दौरान कीटों और रोगों का अत्यधिक आक्रमण होने से तरकारियों की वृद्धि अवरुद्ध होने और उत्पादन कम होने की संभावना है। इसलिए बारिश शेल्टरों में तरकारी का पैदावार करना एक अच्छा विकल्प है। ये शेल्टर बारिश सीधा पौधे पर गिरने से बचाते हैं और इनकी अल्ट्रा वायलट मज़बूत छत्त से पर्याप्त मात्रा में सूर्य प्रकाश अंदर आता है। प्रशिक्षण के दौरान कृ वि कें और कृषि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों ने बारिश शेल्टर की तैयारी और जैव तरकारी पैदावार के नयाचार पर क्लास चलाए।

मुर्गी पालन में अधिकतर अंडा उत्पादन के लिए कृ वि कें का मुर्गी खाद्य

सुरक्षित खाद्य के लिए स्वयं खेती कार्यक्रम के भाग के रूप में डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने 30 मई, 2016 को सुरक्षित एवं पौष्टिक संतुलित लेयर मुर्गी खाद्य के 10 किलोग्राम पैकटों का लोकार्पण किया। भा कृ अनु प-केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, बरेली, उत्तर प्रदेश के खाद्य सूत्रण सोफ्टवेयर के उपयोग से इस खाद्य का सूत्रण किया गया। ऐन्टीबायोटिकों से मुक्त और अन्य उपज वृद्धि में फायदेमंद यह खाद्य भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ-कृ वि कें के बिक्री काउन्टर से खरीदा जा सकता है।

- **डॉ.ए.गोपालकृष्णन,** निदेशक ने नई दिल्ली में 8 अप्रैल, 2016 को आयोजित इन्डो-नोरवीजियन संयुक्त कार्य दल की बैठक में भाग लिया।

  सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प की अध्यक्षता में 16 अप्रैल, 2016 को मून्नार में आयोजित भा कृ अनु प संस्थानों के निदेशकों / भा कृ अनु प के क्षेत्रीय तथा अनुसंधान केन्द्रों / ए आइ सी आर पी के प्रभारियों की बैठक में भाग लिया।

  डॉ. एस. अय्यप्पन, भूतपूर्व महानिदेशक, भा कृ अनु प की अध्यक्षता में 4 मई, 2016 नई दिल्ली में आयोजित समुद्री मात्स्यिकी नीति का मसौदा तैयार करने के लिए गठित समिति की बैठक में भाग लिया।

  एस एम डी, नई दिल्ली में 9 जून, 2016 को आयोजित मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थानों के निदेशकों की बैठक और 10 जून, 2016 को डी ए डी एफ और भा कृ अनु प की विचार-विमर्श बैठक में भाग लिया।

  नई दिल्ली में 14 जून 2016 को राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति का मसौदा तैयार करने के लिए गठित समिति के अध्यक्ष के साथ आयोजित बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. के.एस. मोहम्मद,** अध्यक्ष, एम एफ डी ने विल्लिंगडन द्वीप, कोच्ची में 22 अप्रैल, 2016 को आयोजित भारतीय समुद्री खाद्य निर्यातक संघ (एस ई ए आइ) के तटीय राज्यों के क्षेत्रीय अध्यक्षों की बैठक में भाग लिया।

  राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति के संबंध में कृषि भवन, नई दिल्ली में 4 मई, 1 जून और 9-10 जून, 2016 को आयोजित बैठकों में भाग लिया।

  कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्ची द्वारा 'द्विकपाटी मोलस्कों का वर्गिकी विज्ञान' विषय पर 10-14 मई 2016 को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।

  सी एम एल आर ई, कोच्ची में 22 जून, 2016 को 'जैवविविधता राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र से परे' (बी बी एन जे) विषय पर आयोजित परामर्श बैठक में भाग लिया।

  टी ई ई बी इंडिया की पहल से बी ओ बी पी-आइ जी ओ, चेन्नई में 'तटीय एवं समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर मूल्यांकन अध्ययनों के अध्ययन परिणामों का विकीर्णन' विषय पर 27 जून, 2016 को आयोजित जी आइ इज़ेड-बी ओ बी पी राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

  अंडमान एवं निकोबार द्वीपों में वाणिज्यिक तौर पर मोती उत्पादन की परियोजना से संबंधित विभिन्न मामलों पर चर्चा करने के लिए सचिव (मात्स्यिकी), पोर्ट ब्लेयर के कार्यालय में 29 जून, 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

- **डॉ.वी.कृपा,** अध्यक्ष, एफ ई एम डी ने महासागर सूचना सेवाओं का भारतीय राष्ट्रीय केन्द्र (आइ एन सी ओ आइ एस), हैदराबाद में 12 मई, 2016 को आयोजित आर ए सी बैठक में भाग लिया।

  सी एम एल आर ई की 31 जून, 2016 को आयोजित आर ए सी बैठक में भाग लिया।

- **डॉ.आर.नारायणकुमार,** अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी ने कृषि विस्तार प्रभाग, भा कृ अनु प, नई दिल्ली में 20 मई, 2016 को आयोजित भा कृ अनु प बाह्य परियोजना प्रस्तुतीकरण की परियोजना स्क्रीनिंग समिति (पी एस सी) बैठक में भाग लिया।

  सचिव, डी ए डी एफ, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प और पशुपालन तथा मात्स्यिकी प्रभाग के निदेशकों की बैठक के लिए उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, नई दिल्ली द्वारा 9 जून, 2016 को बुलाई गयी तैयारी बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. आर. नारायणकुमार** और **डॉ. एम. शिवदास** (प्रधान वैज्ञानिक गण) ने टी ई ई बी इंडिया की पहल से तटीय एवं समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर मूल्यांकन अध्ययनों के अध्ययन परिणामों का विकीर्णन विषय पर 27-28 जून, 2016 को आयोजित जी आइ इज़ेड-बी ओ बी पी राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. के.के. जोषी,** अध्यक्ष, एम बी डी ने तिरुवनंतपुरम में 3 जून, 2016 को आयोजित केरल राज्य जैवविविधता बोर्ड विशेषज्ञ समिति की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. पी.यु. ज़क्करिया,** अध्यक्ष, डी एफ डी ने राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति के संबंध में कृषि भवन, नई दिल्ली में 9-10 जून, 2016 को आयोजित बैठकों में भाग लिया।

- **डॉ. के. विजयकुमारन,** प्रधान वैज्ञानिक ने भा कृ अनु प-केन्द्रीय ताजा जल-जीव पालन संस्थान (सी आइ एफ ए), भुवनेश्वर में 26-28 मई 2016 को नीति-शास्त्र विषय पर संवादात्मक सह-शिक्षा कार्यशाला आयोजित की, जिसमें 24 व्यक्तियों ने भाग लिया।

- **डॉ. जो के. किषकूडन,** प्रधान वैज्ञानिक ने तमिलनाडु मात्स्यिकी विश्वविद्यालय के मात्स्यिकी कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान, चेन्नई में 13 मई, 2016 को समुद्री आवास तंत्रों में पिंजरा मछली पालन पर प्रशिक्षण भाषण दिया।

  भा कृ अनु प-सी आइ बी ए की 18 जून, 2016 को आयोजित 48वीं संस्थान प्रबंध परिषद बैठक में भाग लिया।

  यु एस एस टी ई सी द्वारा विशाखपट्टणम में 17 मई, 2016 को गहन तालाब जलजीव पालन प्रौद्योगिकी (आइ पी ए टी) विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. वीरेन्द्र वीर सिंह,** प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली में 24 मई, 2016 को आयोजित राष्ट्रीय तटीय क्षेत्र प्रबंध प्राधिकरण (एन सी इज़ेड एम ए) की 31 वीं बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. अनुलक्ष्मी चेल्लप्पन,** वैज्ञानिक ने भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई में माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह की अध्यक्षता में महाराष्ट्र में स्थित भा कृ अनु प अनुसंधान केन्द्रों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के निष्पादन पर पुनरीक्षण करने के लिए 4 जुलाई, 2016 को श्री विजय देशमुख, राज्य मात्स्यिकी मंत्री, महाराष्ट्र सरकार और श्री राम शिंदे, राज्य कृषि एवं बागवानी मंत्री, महाराष्ट्र सरकार की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र,** प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र ने एन एफ डी बी, हैदराबाद में 12 अप्रैल, 2016 आयोजित आउटरीच परियोजना बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र,** प्रधान वैज्ञानिक और **डॉ. आर. जयकुमार,** वरिष्ठ वैज्ञानिक

ने राज्य मात्स्यिकी विभाग द्वारा एन एफ डी बी द्वारा प्रायोजित समुद्री संवर्धन विकास परियोजना के कार्यान्वयन के संबंध में कोच्ची में 20 मई, 2016 को आयोजित परामर्श बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. शुभदीप घोष,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने बी ओ बी पी द्वारा 16 अप्रैल, 2016 को चेन्नई में 'हिन्द महासागर की ट्यूना और ट्यूना जैसी मछलियाँ' विषय पर आयोजित एक दिवसीय बैठक में भाग लिया।

  विश्व बैंक-जी ई एफ परियोजना 'टिकाऊ मात्स्यिकी और जैवविविधता परिरक्षण-नवोन्मेष और सुधार हेतु प्रतिमान' की परियोजना समन्वयन समिति की दिनांक 2 जून, 2016 को आयोजित प्रथम बैठक में भाग लिया।

  'अधिकतर प्रवासी स्वभाव की मछली स्टॉक के प्रसंग में मात्स्यिकी प्रबंध' विषय पर चेन्नई में 4 जून, 2016 को आयोजित क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. श्याम एस. सलिम,** प्रधान वैज्ञानिक ने महासागर सूचना सेवाओं का भारतीय राष्ट्रीय केन्द्र (आइ एन सी ओ आइ एस), हैदराबाद में महासागर विज्ञान एवं संपदाओं पर परियोजना निर्धारण और अनुवीक्षण समिति (पी ए एम सी) की दिनांक 2-3 मई, 2016 को आयोजित सातवीं बैठक में भाग लिया।

  अबाद प्लासा, कोच्ची में 17 जून, 2016 को आयोजित एशियन नगर जलवायु परिवर्तन लचीला नेटवर्क (ए सी सी सी आर एन) के शेयेर्ड लर्निंग डायलॉग (एस एल डी) कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. आर. जयभास्करन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून में 16 मई, 2016 को ड्यूगोंग परियोजना पर आयोजित राष्ट्रीय लॉंच कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. बी. जोण्सन,** वैज्ञानिक ने रिलायंस फाउन्डेशन द्वारा 15 जून, 2016 को रामनाथपुरम में आयोजित 'सहकारी मेला' में भाग लिया।

  रामनाथपुरम में मदुरै जिला छोटे एवं लघु पैमाने के उद्योग संघ द्वारा 28 जून, 2016 को आयोजित एक दिवसीय उद्यमिता जागरूकता कैंप में 'समुद्री मत्स्यन गाँवों में सामुदायिक विकास के लिए आजीविका विकल्प' विषय पर भाषण दिया।

- **डॉ. के. विनोद** ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु पर्यावरण मंत्रालय में 5 मई, 2016 को आयोजित वन्य जीव अधिनियम, 1972 की अनुसूची में परिवर्तन करने पर चर्चा करने के लिए आयोजित पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की तदर्थ समिति की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. एस. आर. कृपेश शर्मा,** प्रधान वैज्ञानिक और **श्री एन. जी. वैद्या,** तकनीकी अधिकारी ने 30 जून, 2016 को आयोजित कारवार न रा का समिति की 42वीं अर्धवार्षिक बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. षिनोज पारापुरत्तु,** वैज्ञानिक और **डॉ. वी.पी. विपिन कुमार,** प्रधान वैज्ञानिक ने मेरा गाँव मेरा गौरव योजना के अंदर 21 जून, 2016 को आलप्पुषा के पूकैता में सीपी प्रसंस्करण करने वाले मछुआरों के लिए विचार-विमर्श मेला आयोजित किया।

- **डॉ. वी.पी. विपिन कुमार,** प्रधान वैज्ञानिक ने 27 मई, 2016 को मछुआरिन सहायता संघ के कार्मिकों के साथ और 14 जून, 2016 को पोय्या में अम्मा समुद्री खाद्य किचन एस एच जी के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श बैठक आयोजित कीं।

- **श्री सजीव सी.के.** (ए सी टी ओ), **डॉ. नीलेश ए. पवार** (सी टी ओ) और **श्री जनार्दन डी. सारंग** (टी ओ) ने भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई में 27-29 अप्रैल 2016 के दौरान पिल्लै अक्वाकल्चर फाउन्डेशन (पी ए एफ), 'जलकृषि में सामाजिक उद्यमिता' में भाग लिया।

साइक्लिंग में ख्याति

श्री जयप्रसाद श्री वी.डी. सतीशन, एम एल ए से ट्रॉफी प्राप्त करने का दृश्य

श्री के.जी. जयप्रसाद ने पेरिस में वर्ष 2019 में आयोजित की जाने वाली प्रतिष्ठित सुपर रान्डोनियेर्स प्रतियोगिता के लिए अर्हता प्राप्त करने की अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त की। वर्ष में निश्चित समय के अंदर 200, 300, 400 और 600 किलोमीटर की चार साइक्लिंग प्रतियोगिता पूरा करने वालों को यह मान्यता दी जाती है। श्री प्रसाद ने हाल ही में 10000 कि.मी. सुपर रान्डोनियेर्स के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए कोच्ची-पय्यन्नूर-कोच्ची मार्ग की 600 कि.मी. की दूरी दो रातों और एक दिन के 36 घंटों में पूरा की। वर्ष 2016 में श्री प्रसाद ने कोचीन बाइकेर्स क्लब द्वारा अडाक्स क्लब पारीसियन (फ्रान्स) द्वारा आयोजित ब्रेवेट में भाग लिया और कोच्ची से तिरुवनंतपुरम तक की 400 कि.मी. की दूरी 23 घंटों में पूरा की, कोच्ची से कोल्लम तक की 300 कि.मी. की दूरी 15 घंटों में पूरा की और कोच्ची से अडिमाली तक की 200 कि.मी. की दूरी 10 घंटों में पूरा की। श्री प्रसाद हर दिन साइकिल से कार्यालय आते हैं और पहले उन्होंने भा कृ अनु प के वार्षिक खेलकूद मेले के दौरान क्षेत्रीय एवं अंतर-क्षेत्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में चैंपियनशिप हासिल किए हैं।

कार्यशाला/ प्रशिक्षण/ सम्मेलन आदि	तारीख एवं स्थान	प्रतिभागी
महासागर साझेदारी कार्यक्रम-ट्यूना जैसी संपदाओं के सतत विकास के लिए संस्थागत संपदाओं का संपदा मानचित्रण	बी ओ बी पी-आइ जी ओ द्वारा 22.4.2016 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ	डॉ. आर. नारायणकुमार, डॉ. प्रतिभा रोहित, डॉ. ई.एम. अब्दुसमद, डॉ. यु. गंगा (प्रधान वैज्ञानिक गण), डॉ. के.जी. मिनी (वरिष्ठ वैज्ञानिक)
महासागर साझेदारी कार्यक्रम-हितधारकों की सहभागिता बैठक	बी ओ बी पी-आइ जी ओ द्वारा 23.4.2016 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ	श्री सुबल कुमार राउल (वैज्ञानिक)
राष्ट्रीय प्राकृतिक संपदा प्रबंध व्यवस्था	02.05.2016 से 24.06.2016 तक भारतीय दूरसंवेदन संस्थान (आइ आइ आर एस), देहरादून	डॉ. पी. लक्ष्मीलता (प्रधान वैज्ञानिक), सुश्री ई.एम. छन्दप्रज्ञदर्शिनी (वैज्ञानिक)
ट्रान्स्क्रिप्टोन और माइक्रोएरे के उपयोग से जीन अभिव्यक्ति आंकडे की खोज	18.04.2016 से 20.04.2016 तक के आइ एन एफ आर ए कैंपस कषक्कूट्टम	डॉ. संध्या सुकुमारन (वरिष्ठ वैज्ञानिक)
'कृषि विस्तार का प्रभाव निर्धारण' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	6-10 जून 2016, राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी, हैदराबाद	डॉ. बी. जोण्सन (वैज्ञानिक)
लक्षद्वीप के पॉल एंड लाइन ट्यूना मात्स्यिकी के लिए मात्स्यिकी सुधार परियोजना कार्यशाला	28-29 जून 2016 को विश्व वन्य जीव निधि (डब्लियु डब्लियु एफ) द्वारा कवरत्ती में	डॉ. प्रतिभा रोहित (प्रधान वैज्ञानिक) श्री के. मोहम्मद कोया (वैज्ञानिक)
कृषि में बड़ा आंकड़ा विश्लेषण	13-22 जून 2016, एन ए ए आर एम, हैदराबाद	डॉ. जे. जयशंकर (प्रधान वैज्ञानिक)
'ArcGIS Arc view 10- A GIS Primer GDPS with Leica GPS 1200 + GNSS'	21-25 जून 2016, इंडियन जियोइन्फोमाटिक्स सेन्टर, चेन्नई	डॉ. आर. जयकुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. के.के. अनिकुट्टन, डॉ. शेखर मेघराजन (वैज्ञानिक गण), श्री जी. हनुमंत राव (वरिष्ठ तकनीकी सहायक
प्रबंध विकास कार्यक्रम - स्थापना नियमावली	23-27 मई 2016, सचिवालय प्रशिक्षण एवं प्रबंध (आइ एस टी एम), नई दिल्ली	श्री चन्द्रमौली शर्मा श्री आशिश चौबे (स प्र अ)
बजट का निर्माण	23-24 मई 2016, आइ एस टी एम, नई दिल्ली	श्री संतोष कुमार (सहायक) श्री पी. कृष्णकुमारन (स वि ले अ)

पी एच.डी. उपाधि

आर. शरवणन, वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र को "मन्नार खाड़ी के समुद्री अर्चिन के जीवविज्ञान और संपदाओं पर अध्ययन" विषयक थीसीस को तमिल नाडु मात्स्यिकी विश्वविद्यालय (टी एन एफ यु) से 6 मई, 2016 को पी एच.डी. उपाधि प्रदान की गयी।

कार्मिक समाचार

नियुक्तियाँ

नाम	पदनाम	केन्द्र	प्रभावी तारीख
श्रीमती लिवी विल्सन	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	07.04.2016
श्री कुरवा रघु रामुदु	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.04.2016
सुश्री सैमा रहमान	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.04.2016
श्री अदनान हुसैन गोरा	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.04.2016
श्री अब्दुल असीस पी.	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.04.2016
श्री अंबरीश पी. गोप	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.04.2016

श्री भेन्डेकर संतोष नागनाथ	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.04.2016
डॉ. वी. महेश	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.04.2016
श्री ताराचन्द कुमावत	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.04.2016
श्री ए. विनोद कुमार	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.04.2016
श्री राजन कुमार	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	16.04.2016
श्रीमती शिखा रहान्डगले	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	27.04.2016

पदोन्नतियाँ

नाम व पदनाम	पदोन्नत	केन्द्र	प्रभावी तारीख
डॉ. (श्रीमती) यु. गंगा, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	25.04.2014
डॉ. (श्रीमती) शोभा जो किषकूडन वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	29.08.2014
डॉ. (श्रीमती) एस. जास्मिन, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	04.11.2014
डॉ. श्याम एस. सलिम वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	17.11.2014
डॉ. आइ. राजेन्द्रन वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	05.01.2015
डॉ. (श्रीमती) रेखा जे. नायर, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	30.01.2015
डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	04.02.2015
श्री एस. युवराजन उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	06.04.2016
श्रीमती बी. गौरी सहायक	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	06.05.2016
श्री ए.के. कुंजिपालु उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	26.05.2016
श्री गौरी शंकर राव वरिष्ठ तकनीकी सहायक (कंप्यूटर)	तकनीकी अधिकारी (कंप्यूटर)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	22.06.2014
श्रीमती पी.के. सीता तकनीकी अधिकारी	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.07.2014
श्री एन. रुद्रमूर्ति तकनीकी अधिकारी	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	09.09.2014
श्री एच. के. धोकिया तकनीकी अधिकारी	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	01.01.2015
श्री ए. उदयकुमार तकनीकी अधिकारी	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	03.02.2015
श्री नारायण जी. वैद्या तकनीकी अधिकारी	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	कारवार अनुसंधान केन्द्र	01.01.2015
श्री के.एम. वेणुगोपालन तकनीकी अधिकारी	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.01.2015
श्री बी. श्रीधरा तकनीकी अधिकारी	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	01.01.2015
श्री ए.डी. सावंत तकनीकी अधिकारी (सेवानिवृत्त)	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	01.01.2015
श्रीमती सिंधु के. अगस्टिन वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	30.12.2014
श्री ए. गांधी वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	01.01.2015

श्री स्वपन कुमार कर वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	06.03.2015
श्री पी. वेंकटरमणा वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	01.01.2015
श्री किशोर रघुनाथ मैनकर वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	01.01.2015
श्री बशीर अहम्मद आदम शिलेदार वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	01.01.2015
श्री डी.डी. सावंत वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	01.01.2015
श्री आर. अप्पय्या नाइक वरिष्ठ तकनीकी सहायक (सेवानिवृत्त)	तकनीकी अधिकारी	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	01.01.2015
श्री के.सी. प्रदीप कुमार वरिष्ठ तकनीकी सहायक (सेवानिवृत्त)	तकनीकी अधिकारी	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	01.01.2015
श्री सी. उण्णिकृष्णन वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	01.01.2015
श्री ए.वाइ. जेकब वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.01.2015
श्री के.जी. बेबी वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.01.2015
श्री तोमस कुरुविला वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	कोल्लम क्षेत्र केन्द्र	01.01.2015
श्री वी.के. मनु वरिष्ठ तकनीकी सहायक (प्रोग्राम असिस्टन्ट-कंप्यूटर)	तकनीकी अधिकारी (प्रोग्राम असिस्टन्ट-कंप्यूटर)	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	28.01.2015
श्री जी. सुधाकर वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	02.05.2015
श्री ठाकुर दास वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	02.05.2015
श्री वानवी जयंतीलाल दयाभाइ वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	01.07.2015
श्री के.एन. पुष्करन वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.01.2015
श्री वी.के. सुरेश वरिष्ठ तकनीकी सहायक (सेवानिवृत्त)	तकनीकी अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.01.2015
श्री ए. अनसुकोया वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	10.05.2015
श्रीमती दीप्ती एन.वी. वरिष्ठ तकनीकी सहायक (प्रोग्राम असिस्टन्ट-लैब तकनीशियन)	तकनीकी अधिकारी (प्रोग्राम असिस्टन्ट-लैब तकनीशियन)	सी एम एफ आर आइ का कृ वि कें, नारक्कल	01.02.2015
श्री आर. पोन्नय्या वरिष्ठ तकनीकी सहायक (इलक्ट्रीशियन)	तकनीकी अधिकारी (इलक्ट्रिकल)	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	01.01.2015
श्री डी. प्रकाशन तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	23.03.2015
श्रीमती लावण्या रतीश तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	12.07.2015
श्री पूनम अशोक खंडागले तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	15.07.2015
श्री मामिदी सतीश कुमार तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	06.08.2015
श्री जी. हनुमंत राव तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	13.07.2015

श्री एम. अन्बरशु तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	28.07.2015
श्री टी. रतीश तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	21.07.2015
श्री सोनाली एस. माधोल्कर तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	कारवार अनुसंधान केन्द्र	12.07.2015
श्री नरसिंहुलु साधु तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	12.07.2015
श्री अरुण सुरेन्द्रन पी.एस. तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	14.07.2015
श्री के.एस. शैक मोहम्मद यूसफ तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	13.07.2015
श्री बी. राजु तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	14.09.2015
श्री चुदासामा रामजी राजा तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	04.01.2015
श्री वाइ.वी.एस. सूर्यनारायणा तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	03.07.2015
श्री एम. राधाकृष्णन तकनीशियन	वरिष्ठ तकनीशियन	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	14.07.2015
श्री आर. शेल्वकुमार तकनीशियन	वरिष्ठ तकनीशियन	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	13.07.2015
श्रीमती जी. धन्या तकनीशियन	वरिष्ठ तकनीशियन	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	12.07.2015
श्री के. षण्मुखनाथन तकनीशियन	वरिष्ठ तकनीशियन	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	07.06.2015
सुश्री शंकुरु पद्मजा राणी तकनीशियन	वरिष्ठ तकनीशियन	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	12.07.2015
श्री एन. शेल्वकुमार तकनीशियन	वरिष्ठ तकनीशियन	कारवार अनुसंधान केन्द्र	19.07.2015
श्री एस. प्रदीप तकनीशियन	वरिष्ठ तकनीशियन	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	22.07.2015
श्री एम.पी.जाधव तकनीशियन	वरिष्ठ तकनीशियन	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	03.06.2015
श्री पी. राजेन्द्रन तकनीशियन	वरिष्ठ तकनीशियन	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	13.07.2015
श्री षिजु पी. तकनीशियन	वरिष्ठ तकनीशियन	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	17.07.2015
श्री के. सोलमन टी-2 (कनिष्ठ तकनीकी सहायक)	टी-।-3 (तकनीकी सहायक)	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.01.2001
डॉ. सुजित एस.के. वरिष्ठ तकनीकी सहायक (सेवानिवृत्त)	तकनीकी अधिकारी	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	31.10.2014
श्री एस. शेखर वी. रायर वरिष्ठ तकनीकी सहायक (स्किन डाइवर)	तकनीकी अधिकारी (स्किन डाइवर)	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	03.10.2014
श्री यु. जयराम वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	03.07.2015
श्री मोहम्मद सताकत्तुल्ला वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	01.01.2015
श्री जे. पद्मनाथन तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	31.12.2014

स्थानांतरण

नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
श्रीमती बी.गौरी, सहायक प्रशासनिक अधिकारी	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	20.06.2016
श्री आशिश चौबे, सहायक प्रशासनिक अधिकारी	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	27.06.2016
सुश्री नन्दना पी.आर., स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	सी एम एफ आर आइ कृ वि कें, नारक्कल	13.04.2016
श्री एम.के. अनिल कुमार., स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ कृ वि कें, नारक्कल	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	15.04.2016
सुश्री निषिदा पी., स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ कृ वि कें, नारक्कल	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	15.04.2016
सुश्री आरती आर. पिल्लै, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	18.04.2016
सुश्री विजीशा एम., स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	18.04.2016
श्री अनूप के.जी., स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	21.04.2016
श्री मिथुन कुमार पी.एच., स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	कृ वि कें (एरणाकुलम)	22.04.2016
श्री पी.मुत्तुकृष्णन, तकनीकी अधिकारी (स्किन डाइवर)	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	06.05.2016
श्रीमती रम्या अभिजित, वैज्ञानिक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	06.06.2016
श्री एस. तिरुमलै शेल्वन, वैज्ञानिक	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	06.06.2016
डॉ. जी.बी.पुरुषोत्तमा, वैज्ञानिक	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	06.06.2016
डॉ. (श्रीमती) जीना एन.एस., वैज्ञानिक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	मुख्यालय, कोच्ची	09.06.2016
श्री शंकर एम., वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	15.06.2016
डॉ. (श्रीमती) स्वातिलक्ष्मी पी.एस., प्रधान वैज्ञानिक	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	15.06.2016
श्रीमती गोमती पी., वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	23.06.2016
डॉ. एम. शिवदास, प्रधान वैज्ञानिक	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	24.06.2016
डॉ. (श्रीमती) पी.टी. शारदा, प्रधान वैज्ञानिक	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	24.06.2016
श्री नेनावत राजेन्द्र नाइक, वैज्ञानिक	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	30.06.2016

पदत्याग

नाम व पदनाम	से	प्रभावी तारीख
श्री किरण के.एम., स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	07.06.2016

बैठक

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की संस्थान अनुसंधान परिषद (आइ आर सी) की 22वीं बैठक 28 अप्रैल, 2016 से 2 मई, 2016 तक आयोजित की गयी।

अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्तियाँ

श्रीमती जी. आबिता
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
30.04.2016
मद्रास अनुसंधान केन्द्र

श्री जी. चक्रपाणी
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
30.04.2016
मद्रास अनुसंधान केन्द्र

श्री एस. यादवय्या
तकनीकी अधिकारी (मोटोर ड्राइवर)
31.05.2016
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

श्री एम.बी. सैनुदीन
तकनीकी अधिकारी
31.05.2016
भा कृ अनु प-
सी एम एफ आर आइ,
कोच्ची

श्री ए. केशवा
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
31.05.2016
मांगलूर अनुसंधान केन्द्र

श्रीमती सी. पुष्पराणी
सहायक
30.06.2016
टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र

श्री सी. मणिबाल
तकनीकी अधिकारी
30.06.2016
मद्रास अनुसंधान केन्द्र

श्री बी. श्रीधरा
तकनीकी अधिकारी
30.06.2016
मांगलूर अनुसंधान केन्द्र

मात्स्यिकी विज्ञान के क्षेत्र में वर्ष 1954 से लेकर प्रमुख इंडियन जर्नल

ISSN 0970-6011

वार्षिक चंदा ₹ 1000 $ 100
निदेशक, सी एम एफ आर आइ
कोच्ची - 682 018 से संपर्क करें
इन्टरनेशनल इंपैक्ट फैक्टर 0.195
एन ए ए एस रेटिंग 6.2

श्रद्धांजलि

श्री एस. मुरुगन
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
25.04.2016
मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र

काली ओसेल्लारिस मछलियाँ

कृपया पृष्ठ सं.8 देखें

सी एम एफ आर आइ
CMFRI

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारियों को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।